वार्षिक 300/- रूपए
website : www.vhp.org

मूल्य 15 रूपए
कुल पृष्ठ - 28

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

हिन्दू विश्व

जनवरी 01–15, 2025

महाकुंभ

अध्यात्म और समरसता का प्रतीक

@eHinduVishwa

/HinduVishwa

आबू धाबी में नवनिर्मित स्वामीनारायण भगवान के मंदिर के मुख्य पुजारी के साथ उपस्थित विहिप अध्यक्ष मा. आलोक कुमार जी

बाँग्लादेश में चिन्मय कृष्ण दास की अबिलंब रिहाई व हिंदुओं के लगातार उत्पीड़न रोकने की मांग को लेकर पटना (बिहार) में प्रेसवार्ता करते विहिप महामंत्री श्री बजरंग लाल बागड़ा

हरिद्वार में विहिप–प्रांतीय मार्गदर्शक मंडल की बैठक का पूज्य संतों के साथ शुभारंभ करते विहिप संरक्षक मा. दिनेशचन्द्र जी तथा बैठक को संबोधित करते श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के महामंत्री व विहिप केन्द्रीय उपाध्यक्ष श्री चम्पत राय जी

कंचनपूर, सुदूर पश्चिम प्रांत, नेपाल में विश्व हिन्दू परिषद, नेपाल के धर्मरक्षा निधि कार्यक्रम को संबोधित करते विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद पराण्डे जी

अशोक सिंहल वैदिक शोध संस्थान गुरुग्राम एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के तत्वावधान में आयोजित वैदिक संगोष्ठी में उपस्थित विहिप के संरक्षक मा. दिनेशचन्द्र जी।

वारांगल, तेलंगाना में गीता जयंती के दिन शौर्य दिवस के निमित्त बजरंग दल का त्रिशूल दीक्षा तथा शौर्य यात्रा के कार्यक्रम को संबोधित करते विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद पराण्डे। कार्यक्रम में 200 से अधिक गांव के हजारों कार्यकर्ता सम्मिलित हुए।

इस पक्ष में ....

हिन्दू विश्व

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

01-15 जनवरी, 2025

पौश शुक्ल - माघ कृष्ण पक्ष

पिंगल संवत्सर

वि. सं. - 2081, युगाब्द- 5126

सम्पादक

विजय शंकर तिवारी

सह सम्पादक

मुरारी शरण शुक्ल

मो. - 7217685539

परामर्शदाता

सर्वश्री राजेन्द्र शर्मा, धर्मनारायण शर्मा, विजय कुमार, रवि पराशर

व्यवस्थापक

श्री दूधनाथ शुक्ल

मो. - 09582555152

सज्जा

श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :

'हिन्दू विश्व'

संकटमोचन आश्रम, प्रभाग - 6

रामकृष्णपुरम्,

नई दिल्ली-110022-05

दूरभाष : 09582555152

011-26178992, 011-26103495

hinduvishwa@gmail.com

- : मूल्य :-

विदेशों के लिए वार्षिक डाक व्यय सहित	$ 75 USD
एक प्रति	15/-
वार्षिक	300/-
त्रिवर्षीय	750/-
पंचवर्षीय	1,200/-
दसवर्षीय	2,250/-
पन्द्रह वर्षीय	3,100/-

पत्रिका की सदस्यता हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें, उसका स्क्रीन शॉट और अपना पता व्यवस्थापक को 9582555152 नम्बर पर भेजें।

वैधानिक सूचना

- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

कुल पेज - 28

गार्हपत्यादि तीन रूपों वाले, यजमान के घरों को सुस्थिर करने वाले अग्निदेव लपटों से संव्याप्त होकर यज्ञस्थल में अपनी वेदिका पर प्रतिष्ठित होते हैं। अग्निदेव, प्रजाजनों द्वारा दी गई आहुतियाँ लेकर, यजमानों के निमित्त दानदाता बनकर तथा प्रजाजनों के लिए ही शत्रुओंको विनष्ट करते हुए, देवों के समीप जाते हैं। – ऋग्वेद

प्रयागराज की त्रिवेणी में मोक्षदायी कुम्भ 05

मोहम्मद युनुस और डीप स्टेट द्वारा बाँग्लादेश में हिंदुओं के खिलाफ अत्याचार	08
मुस्लिम तुष्टिकरण का नया पर्याटन केंद्र बना संभल	10
विशेषाधिकार वाली मानसिकता का सामना	12
हिन्दू जागृति विश्व का सबसे कठिन कार्य	13
हिंदुओं पर अत्याचार हो रहे हैं लेकिन सेक्युलर गैंग कह रही है कि	14
साँस्कृतिक पहचान को कुचलने की कुचेष्टाएं कब तक?	16
भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती एक ऐतिहासिक प्रेरणा	18
धनिया का आध्यात्मिक और साँस्कृतिक महत्व	20
मसूड़ों का सूजन और दर्द को कम करने के घरेलू उपयोग	22
बाँग्लादेश में चिन्मय कृष्ण दास की अबिलंब रिहाई व हिंदुओं के	23
रोटोरुआ का पहला भजन और कीर्तन सम्मेलन भक्ति का उत्सव और एकता	24
विश्व हिन्दू परिषद के प्रांतीय मार्गदर्शक मंडल की बैठक	25
आबू धाबी एमिरेट्स की यात्रा	26

सुभाषित

धन्याः खलु महात्मानो ये बुद्धया कोपमुत्थितम्।
निरुन्धन्ति महात्मानो दीप्तमग्निमिवाम्भसा।।

वे महान पुरुष धन्य हैं, जो अपने उठे हुए क्रोध को अपनी बुद्धि के द्वारा उसी प्रकार रोक देते हैं, जैसे दीप्त अग्नि को जल से रोक दिया जाता है।

सम्पादकीय

विजय शंकर तिवारी

महाकुंभ: भारत की धरोहर, अध्यात्म और समरसता का प्रतीक

महाकुंभ भारतीय संस्कृति, सभ्यता और अध्यात्म का एक अद्वितीय पर्व है, जो सहस्त्राब्दियों से संपूर्ण विश्व को भारतीयता के दर्शन कराता आ रहा है। यह केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि यह हमारे समाज की गहरी जड़ों और परंपराओं को प्रतिबिंबित करता है। महाकुंभ हमारे गौरवशाली इतिहास, वैदिक ज्ञान और सामाजिक एकता का ऐसा संगम है, जो हर बार करोड़ों लोगों को अपने आध्यात्मिक और सांस्कृतिक चमत्कार से प्रेरित करता है।

महाकुंभ का आयोजन हर 12 वर्षों में चार पवित्र स्थलों – हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन और नासिक में होता है। इन स्थलों का महत्व केवल उनके धार्मिक और पौराणिक स्वरूप तक सीमित नहीं है, बल्कि ये स्थल भारतीय संस्कृति के जाज्वल्य और धरोहर का प्रतीक हैं। गंगा, यमुना, सरस्वती, क्षिप्रा और गोदावरी नदियों का पवित्र संगम न केवल जल को पवित्र बनाता है, बल्कि आत्मा को भी शुद्ध करने का माध्यम बनता है।

महाकुंभ का इतिहास हमारी प्राचीन पौराणिक कथाओं में रचा–बसा है। यह कथा समुद्र मंथन और देव–दानव संघर्ष से जुड़ी है, जिसमें अमृत कलश की प्राप्ति हुई थी। यह अमृत कलश चार स्थानों हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन और नासिक पर गिरा था, और इन्हीं स्थानों पर महाकुंभ का आयोजन होता है। यह कथा हमारे लिए केवल पौराणिक आख्यान नहीं है, बल्कि यह जीवन के संघर्ष और विजय का प्रतीक भी है।

महाकुंभ में स्नान केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं है, यह आत्मा की शुद्धि, मोक्ष की कामना और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग है। यहाँ लाखों संत, महात्मा और आचार्य एकत्र होते हैं। वे अपने उपदेश, प्रवचन और ज्ञान से समाज को सही दिशा दिखाने का कार्य करते हैं। योग, ध्यान, और मंत्रोच्चार के माध्यम से वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा से भर जाता है। यहाँ आने वाले श्रद्धालु न केवल पवित्र जल में डुबकी लगाते हैं, बल्कि अपने भीतर की अशांति से मुक्ति पाकर एक नई ऊर्जा और आशा के साथ लौटते हैं।

महाकुंभ मेला भारतीय समाज की विविधता में एकता का प्रतीक है। यह आयोजन जाति, धर्म, भाषा और क्षेत्र की सीमाओं को समाप्त कर समाज में समानता का अद्वितीय संदेश देता है। यहाँ अमीर–गरीब, राजा–रंक सभी एक ही नदी के तट पर स्नान करते हैं और समानता का अनुभव करते हैं। यह भारत की "वसुधैव कुटुंबकम्" की विचारधारा को जीवन में उतारने का एक जीवंत उदाहरण है।

महाकुंभ भारतीय संस्कृति और परंपराओं का उत्सव है। यहाँ आने वाले तीर्थयात्री भारत के विभिन्न हिस्सों से अपनी सांस्कृतिक विविधता लेकर आते हैं। यह आयोजन हमारी धरोहर को नई पीढ़ियों तक पहुँचाने का एक सशक्त माध्यम है। विदेशी पर्यटकों और शोधकर्ताओं के लिए यह भारत के समृद्ध सांस्कृतिक वैभव का एक अद्वितीय अवसर प्रस्तुत करता है।

आज के युग में, जब आधुनिकता की दौड़ में लोग अपनी जड़ों से कटते जा रहे हैं, महाकुंभ एक ऐसा आयोजन है जो हमें हमारी जड़ों की याद दिलाता है। यह हमें अपनी संस्कृति और मूल्यों से जुड़े रहने की प्रेरणा देता है। महाकुंभ केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं है, बल्कि यह हमें प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने और जीवन में संतुलन बनाए रखने की शिक्षा देता है।

महाकुंभ केवल भारतीय समाज तक सीमित नहीं है। यह आयोजन आज विश्व मंच पर भारत की संस्कृति, अध्यात्म और दर्शन को प्रस्तुत करता है। यहाँ लाखों विदेशी पर्यटक भारतीय जीवन दर्शन और सनातन परंपरा का अध्ययन करने आते हैं। यह आयोजन भारत को विश्व गुरु के रूप में प्रस्तुत करने का माध्यम भी बनता है।

महाकुंभ भारत के ऐतिहासिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक वैभव का दर्शन है। यह न केवल एक धार्मिक आयोजन है, बल्कि यह भारतीयता का उत्सव है, जो समाज को समानता, समरसता और एकता का संदेश देता है। आइए, हम सब मिलकर इस अद्भुत पर्व से प्रेरणा लें और इसे केवल एक परंपरा तक सीमित न रखकर इसे भारतीयता और विश्व बंधुत्व का प्रतीक बनाएं। महाकुंभ हमारी धरोहर है, और इसे संजोकर रखना हम सबका कर्तव्य है।

महाकुंभ में स्नान केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं है, यह आत्मा की शुद्धि, मोक्ष की कामना और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग है। यहाँ लाखों संत, महात्मा और आचार्य एकत्र होते हैं। वे अपने उपदेश, प्रवचन और ज्ञान से समाज को सही दिशा दिखाने का कार्य करते हैं। योग, ध्यान, और मंत्रोच्चार के माध्यम से वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा से भर जाता है। यहाँ आने वाले श्रद्धालु न केवल पवित्र जल में डुबकी लगाते हैं, बल्कि अपने भीतर की अशांति से मुक्ति पाकर एक नई ऊर्जा और आशा के साथ लौटते हैं।

प्रयागराज की त्रिवेणी में मोक्षदायी कुम्भ

मुरारी शरण शुक्ल
सह सम्पादक हिन्दू विश्व

कुम्भ का शाब्दिक अर्थ है घड़ा। यज्ञ–अनुष्ठानों में इसके लिए कलश शब्द प्रयुक्त होता है। यह मिट्टी इत्यादि पंच तत्वों से बनता है, इन्हीं पंच तत्वों से मानव शरीर भी निर्मित होता है। कुम्भ शब्द की उत्पत्ति कुंभूमि कुस्सितं वा उम्भति पूरयति+अय से हुई है। कुम्भ का अर्थ भूमि या पृथ्वी के रूप में भी आंका जाता है। कुं अम्भा धातु तथा अप प्रत्यय के संयोग से कुम्भ शब्द बना है, उम्भति का अर्थ है संक्षिप्त करना या भरना, पूर्यात का अर्थ भरना या पूरा करना। घड़ा, जल भरने का पात्र अर्थात् कलश। राशि चक्र में ग्यारहवीं राशि का नाम भी कुम्भ है। कुम्भ शब्द के अनेक अर्थ होते हैं। कुम्भ भारतीय संस्कृति में मंगल का प्रतीक है, शकुन का प्रतीक है, शोभा, सौन्दर्य एवं पूर्णत्व का वाचक भी है। स्वास्तिक चिन्हों से अंकित अक्षत्, दुर्वा, नारिकेल फल से ढँका हुआ, आम्र पल्लव से युक्त जलपूर्ण कुम्भ आदिकाल से आज तक मंगल के प्रतीक के रूप में चला आ रहा है। भारतीय सँस्कृति में जन्म से लेकर मृत्यु तक के सभी सँस्कारों में कुम्भ (कलश) का सर्वाधिक महत्त्व है। अस्थि कलश में भी कुम्भ और गंगा का ही योग है।

समुद्रमन्थन और अमृत घट

यहाँ कुम्भ का सम्बन्ध समुद्रमन्थन से उत्पन्न अमृतघट से है। इस अमृतघट को असुर गण उठा ले गये थे, जिसको गरुड़ पुनः पृथ्वी पर ले आये। जिन–जिन स्थानों पर यह अमृतघट (कुम्भ) रखा गया, वहाँ अमृत–बिन्दुओं के छलक जाने से, वे सभी प्रदेश पुण्यस्थल हो गये। वहाँ निश्चित समय पर स्नान–दान–पुण्य करने से अमृत– पद (मोक्ष) की प्राप्ति होती है। बारह– बारह वर्षों के अन्तर से चार मुख्य तीर्थों में लगने वाला स्नान–दान का ग्रहयोग है, कुम्भ।

कितने कुम्भ पर्व?

इसके चार स्थल प्रयाग, हरिद्वार, नासिक–पंचवटी और अवन्तिका (उज्जैन) हैं। (१) जब सूर्य तथा चन्द्र मकर राशि पर हों, गुरु वृषभ राशि पर हो, अमावस्या हो, ये सब योग जुटने पर प्रयाग में कुम्भयोग पड़ता है। इस अवसर पर त्रिवेणी में स्नान करना सहस्रों अश्वमेध यज्ञों, सैकड़ों वाजपेय यज्ञों तथा एक लाख बार पृथ्वी की प्रदक्षिणा करने से भी अधिक पुण्य प्रदान करता है। कुम्भ के इस अवसर पर तीर्थयात्रियों को मुख्य दो लाभ होते हैं; गंगास्नान तथा सन्तसमागम। (२) जिस समय गुरु कुम्भ राशि पर और सूर्य मेष राशि पर हों, तब हरिद्वार में कुम्भपर्व होता है। (३) जिस समय गुरु सिंह राशि पर स्थित हो तथा सूर्य एवं चन्द्र कर्क राशि पर हों, तब नासिक में कुम्भ होता है। (४) जिस समय सूर्य तुला राशि पर स्थित हो और गुरु वृश्चिक राशि पर हों, तब उज्जैन में कुम्भपर्व मनाया जाता है।

गंगा प्रयाग में दुर्लभ

सर्वत्र सुलभा गंगा त्रिषु स्थानेषु दुर्लभाः।
गंगाद्वारे प्रयागे च गंगासागर संगमे।।
गंगा जहाँ से प्रवाहित होती है, उन सभी स्थानों पर वह सुलभ है, किन्तु तीन स्थानों पर यह दुर्लभ है। मत्स्यपुराण में गंगाद्वार अर्थात हरिद्वार, प्रयागराज तथा गंगा और सागर के संगम बिन्दु गंगासागर में इस गंगा को अत्यंत दुर्लभ कहा गया है। गंगा के इन तीर्थों को सर्वकालिक तीर्थ भी कहा गया है। कहा जाता है कि अन्य सभी तीर्थ कालक्रम में निर्मत होते हैं और नष्ट भी हो जाते हैं। किन्तु उपरोक्त तीनों तीर्थ राजा भागीरथ के प्रयत्न से निर्मित हुए अविनाशी तीर्थ हैं। इसीलिए इनकी महत्ता कालातीत भी है और लोकातीत भी।

प्रयाग और प्रयागराज

गंगा के विभिन्न पुण्यदायी नदियों से बने संगम को, जहाँ देवताओं और ऋषियों नें प्रकृष्ट याग (यज्ञ) करके उसको और पुण्यदायी बना दिया है, ऐसे अलौकिक संगम स्थलों को प्रयाग कहा गया है। पंच प्रयाग और चतुर्दश प्रयाग की चर्चा तो सर्वत्र सुलभ है, जनता को प्रचुरता में ज्ञात है, शास्त्रों में शोध करने से कुल

तीस प्रयाग प्राप्त हुए हैं, इनमें तीसवाँ प्रयाग प्रयागराज के नाम से विख्यात है, इसे तीर्थराज भी कहा जाता है। यहाँ गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती का पवित्र संगम है, यह मोक्षदायी है। यहाँ स्नान, दान, सत्संग, कल्पवास, मंत्रपाठ, वेदपाठ, अध्ययन, साधना करने से विद्याएँ और अभिलाषाएँ सिद्ध हो जाती हैं। लौकिक और पारलौकिक दोनों सिद्धियों को साधने में अतिशय सहायक है, यह प्रयागराज।

प्रयाग नष्ट नहीं होता

नरसिंहपुराण (६५.१७) में विष्णु को प्रयाग में योगमूर्ति के रूप में स्थित बताया गया है। मत्स्यपुराण (१११.४–१०) के अनुसार रुद्र द्वारा एक कल्प के उपरान्त प्रलय करने पर भी प्रयाग नष्ट नहीं होता। उस समय प्रतिष्ठान के उत्तरी भाग में ब्रह्मा छद्म वेश में, विष्णु वेणीमाधव रूप में तथा शिव वटवृक्ष के रूप में आवास करते हैं और सभी देव, गंधर्व, सिद्ध तथा ऋषि पाप–शक्तियों से प्रयागमण्डल की रक्षा करते हैं। इसीलिए मत्स्यपुराण (१०.४.१८) में तीर्थयात्री को प्रयाग जाकर एक मास निवास करने तथा संयमपूर्वक देवताओं और पितरों की पूजा करके अभीष्ट फल प्राप्त करने का विधान है।

प्रयागराज

प्रयाग–गंगा–यमुना के संगम स्थल प्रयाग को पुराणों (मत्स्य १०६.१५; स्कन्द, काशी. ७.४५; पद्म ६.२३. २७–३५ तथा अन्य) में "तीर्थराज" (तीर्थों का राजा) नाम से अभिहित किया गया है। इस संगम के सम्बन्ध में ऋग्वेद (१०.७५) में कहा गया है कि जहाँ कृष्ण (काले) और श्वेत (स्वच्छ) जल वाली दो सरिताओं का संगम है, वहाँ स्नान करने से मनुष्य स्वर्गारोहण करता है। प्रजापति (ब्रह्मा) ने आहुति की तीन वेदियाँ बनायी थीं– कुरुक्षेत्र, प्रयाग और गया। इनमें प्रयाग मध्यम वेदी है। माना जाता है कि यहाँ गंगा, यमुना और सरस्वती (पाताल से आने वाली) तीन सरिताओं का संगम हुआ है। पर सरस्वती का कोई बाह्य अस्तित्व दृष्टिगत नहीं होता। मत्स्य (१०४.१२), कूर्म (१.३६.२७) तथा अग्नि (१११.६–७) आदि पुराणों के अनुसार, जो प्रयाग का दर्शन करके उसका नामोच्चारण करता है तथा वहाँ की मिट्टी का अपने शरीर पर आलेप करता है, वह पापमुक्त हो जाता है। वहाँ स्नान करने वाला स्वर्ग को प्राप्त होता है तथा देह त्याग करने वाला पुनः संसार में उत्पन्न नहीं होता। यह केशव को प्रिय (इष्ट) है। इसे त्रिवेणी कहते हैं। प्रयाग शब्द की व्युत्पत्ति वनपर्व (८७.१८–१६) में यज् धातु से मानी गयी है। उसके अनुसार सर्वात्मा ब्रह्मा ने सर्वप्रथम यहाँ यजन किया था, आहुति दी थी, इसलिए इसका नाम प्रयाग पड़ गया।

प्रयाग की सीमा

पुराणों में प्रयाग–मण्डल, प्रयाग और वेणी अथवा त्रिवेणी की विविध व्याख्याएँ की गयी है। मत्स्य तथा पद्मपुराण के अनुसार प्रयागमण्डल पाँच योजन की परिधि में विस्तृत है और उसमें प्रविष्ट होने पर एक–एक पद पर अश्वमेध यज्ञ का पुण्य मिलता है। प्रयाग की सीमा प्रतिष्ठान (झूंसी) से वासुकिसेतु तक तथा कंबल और अश्वतर नागों तक स्थित है। यह तीनों लोकों में प्रजापति की पुण्यस्थली के नाम से विख्यात है। पद्मपुराण (1.43–47) के अनुसार 'वेणी' क्षेत्र प्रयाग की सीमा में २० धनुष तक की दूरी में विस्तृत है। वहाँ प्रयाग, प्रतिष्ठान (झुंसी) तथा अलर्कपुर (अरैल) नाम के तीन कूप हैं। मत्स्य (११०.४) और अग्नि (१११.१२) पुराणों के अनुसार वहाँ तीन अग्नि–कुण्ड भी हैं, जिनके मध्य से होकर गंगा बहती है। वनपर्व (८५.८१ और ८५) तथा मत्स्य. (१०४.१६–१७) में बताया गया है कि प्रयाग में नित्य स्नान को 'वेणी' अर्थात् दो नदियों (गंगा और यमुना) का संगम स्नान कहते हैं। वनपर्व (८५.७५) तथा अन्य पुराणों में गंगा और यमुना के मध्य की भूमि को पृथ्वी का जघन या कटिप्रदेश कहा गया है। इसका तात्पर्य है पृथ्वी का सबसे अधिक समृद्ध प्रदेश अथवा मध्य भाग।

ऊँकार स्वरूपा त्रिवेणी

गंगा, यमुना और सरस्वती के त्रिवेणीसंगम को "ऊँकार" नाम से अभिहित किया गया है। 'ओंकार' का 'ओम् परब्रह्म परमेश्वर की ओर रहस्यात्मक संकेत करता है। यही सर्वसुखप्रदायिनी त्रिवेणी का भी सूचक है। ओंकार का अकार सरस्वती का प्रतीक, उकार यमुना का प्रतीक तथा मकार गंगा का प्रतीक है । तीनों क्रमशः प्रद्युम्न, अनिरुद्ध तथा संकर्षण, हरि के व्यूह को उद्भूत करने वाली हैं। इस प्रकार इन तीनों का संगम त्रिवेणी नाम से विख्यात है (त्रिस्थलीसेतु, पृष्ठ ८)।

प्रयाग में नारी का भी क्षौरकर्म

क्षौर कर्म (शिरोमुंडन) भी प्रयाग में सम्पन्न होने पर पापमुक्ति का हेतु माना गया है। बच्चों और विधवाओं के क्षौर कर्म का विधान तो है ही, यहाँ तक कि सधवा पत्नियों के क्षौर कर्म का भी विधान 'त्रिस्थलीसेतु' के अनुसार मिलता है। वहाँ बताया गया है कि सधवा स्त्रियों को अपने केशों की सुन्दर वेणी बनाकर, सभी प्रकार के केशविन्यास सम्बन्धी व्यंजनों से सजाकर पति की आज्ञा से (वेणी के अग्र भाग का) क्षौर कर्म कराना चाहिए। तत्पश्चात् कटी हुई वेणी को

अंजली में लेकर उसके बराबर स्वर्ण या चाँदी की वेणी भी लेकर जुड़े हाथ से संगम स्थल पर बहा देना चाहिए और कहना चाहिए कि सभी पाप नष्ट हो जायें और हमारा सौभाग्य उत्तरोत्तर वृद्धि पर रहे। सधवा नारी के लिए एक मात्र प्रयाग में ही क्षौर कर्म कराने का विधान है।

प्रयाग में आत्महत्या और मोक्ष

(कृपया आप ऐसा न करें। हम केवल सन्दर्भ बस उद्धृत कर रहे हैं।)

प्रयाग में आत्महत्या करने का सामान्य सिद्धान्त के अनुसार निषेध है। कुछ अपवादों के लिए ही इसको प्रोत्साहन दिया जाता है। ब्राह्मण के हत्यारे, सुरापान करने वाले, ब्राह्मण का धन चुराने वाले, असाध्य रोगी, शरीर की शुद्धि में असमर्थ, वृद्ध जो रोगी भी हो, रोग से मुक्त न हो सकता हो, ये सभी प्रयाग में आत्मघात कर सकते हैं। देखें– आदिपुराण और अत्रिस्मृति। गृहस्थ जो संसार के जीवन से मुक्त होना चाहता हो, वह भी त्रिवेणीसंगम पर जाकर वटवृक्ष के नीचे आत्मघात कर सकता है। पत्नी के लिए पति के साथ सहमरण या अनुमरण का विधान है, पर गर्भिणी के लिए यह विधान नहीं है। दे. नारदीय, पूर्वाद्ध, ७.५२–५३। प्रयाग में आत्मघात करने वाले को पुराणों के अनुसार मोक्ष की प्राप्ति होती है। कूर्म. (१.३६.१६–३६) के अनुसार योगी गंगा–यमुना के संगम पर आत्महत्या करके स्वर्ग प्राप्त करते हैं, नरक नहीं देखना पड़ता।

वैश्यों और शूद्रों के लिए आत्महत्या का निषेध

प्रयाग में वैश्यों और शूद्रों के लिए आत्महत्या विवशता की स्थिति में यदा–कदा ही मान्य थी। किन्तु ब्राह्मणों और क्षत्रियों के द्वारा आत्म–अग्न्याहुति दिया जाना एक विशेष विधान के अनुसार उचित था। अतः जो ऐसा करना चाहे, तो ग्रहण के दिन यह कार्य सम्पन्न करते थे, या किसी व्यक्ति को मूल्य देकर डूबने के लिए क्रय कर लेते थे। (अलबरूनी का भारत, भाग २, १०. १७०)। सामान्य धारणा यह थी कि इस धार्मिक आत्मघात से मनुष्य जन्म और मरण के बन्धन से मुक्ति पा जाता है और उसे स्थायी अमरत्व (मोक्ष) अथवा निर्वाण

की प्राप्ति होती है। इस धारणा का विस्तार यहाँ तक हुआ कि अहिंसावादी जैन धर्मावलम्बी भी इस धार्मिक आत्मघात को प्रोत्साहन देने लगे। कुछ पुराणों के अनुसार तीर्थयात्रा आरम्भ करके रास्ते में ही व्यक्ति यदि मृत्यु को प्राप्त हो और प्रयाग का नाम ले, तो उसे बहुत पुण्यफल होता है। अपने घर में मरते समय भी यदि व्यक्ति प्रयाग का नाम स्मरण कर ले, तो ब्रह्मलोक को पहुँच जाता है और वहाँ संन्यासियों, सिद्धों तथा मुनियों के बीच रहता है।

नारी गर्भ और कुम्भ

वैदिक ऋषियों ने कुम्भ को नारी–गर्भ से भी समीकृत किया है। यजुर्वेद के अनुसार, योनि के भीतरी गर्भ में कुम्भ स्थित है, जो गर्भस्थ शिशु को धारण करता है। एक ऋक् से ज्ञात होता है कि यज्ञ के अवसर पर कुम्भ में बीज (रेत) सिंचन के पश्चात् उससे वशिष्ठ और अगस्त्य का प्रादुर्भाव हुआ। नारी गर्भ की रचना कुम्भ के सदृश माना गया है। जनक तनया सीता का जन्म स्वर्ण कलश से हुआ, यह सर्व विदित है। प्रयाग के संगम की भी रचना कुम्भ के सदृश माना गया है।

प्राणायाम और कुम्भ

प्राणायाम की कुम्भक–क्रिया में हृदय को कुम्भ मानकर बाहर की वायु खींचकर उसमें भरी जाती है। फेफड़े के असँख्य वायु कोश, जहाँ ऑक्सीजन को सोखने वाले रिसेप्टर्स होते हैं, ये ऑक्सीजन को सोखकर रक्त की हीमोग्लोबिन से उनका मेल कराते हैं। यह शरीर के अंदर की अमृतवर्षा और प्राण पोषण की एक प्रक्रिया है, उन वायु कोशों की रचना भी कुम्भ सदृश होती है। हलायुधकोश में महाभारत का उद्धरण देते हुए, कुम्भ करें शुद्धात्मा और विष्णु का पर्याय कहा है।

वेदों में कुम्भ

'कुम्भ' शब्द ऋग्वेद में पाँच से अधिक बार, अर्थववेद में दस बार और यजुर्वेद में अनेक बार आया है। देवालय के प्रतिमा प्रतिष्ठापन केन्द्र को गर्भगृह कहा जाता है, अर्थात् उसकी भी रचना गर्भ अर्थात घट से समीकृत की जाती है। ब्रह्माण्ड की रचना को भी कुम्भ के सदृश ही माना गया है। पृष्ठ तनाव के कारण कमल के पत्ते पर जल की बुन्दें भी कुम्भ सदृश आकृति ग्रहण करती हैं। पृथ्वी भी ऐसी ही आकृति ग्रहण करती है। ब्रह्माण्ड के सभी खगोलीय पिण्ड भी प्रकारान्तर से ऐसी ही आकृति ग्रहण करते हैं। सौरमंडल, अन्य तारामंडल, मंदाकिनी और अन्य आकाशगंगा भी कुम्भ सदृश आकृति ग्रहण करते हैं। पृथ्वी का परिक्रमण पथ भी कुम्भाकार है। ऐसी रचना पृथ्वी का जो भी भाग ग्रहण किया हुआ है, उनको द्वादश ज्योतिर्लिंग स्थल, 52 शक्तिपीठ स्थल, 108 विष्णुतीर्थ स्थल, कुम्भ स्थल और अन्य पवित्र तीर्थों के रूप में जाना जाता है। वेदों में कुम्भ को पुर्णपात्र के रूप में उद्धृत किया गया है। पूर्ण कलश यजमान के धनधान्य की पूर्णता का प्रतीक था। "यजमान का कलश पूर्णतः भरा है, यह उसके लिए कल्याणप्रद हो।" कुम्भ का उपयोग घृत–अमृत और सोमरस रखने के लिए भी किया जाता था। कुम्भ में औषधी संग्रह और निर्माण भी किया जाता था। वेदों में कलश को समुद्रस्थ कहा जाना भी महत्वपूर्ण है। अथर्ववेद में पितरों के लिए "कुम्भ दान" का उल्लेख है।

murari.shukla@gmail.com

मोहम्मद यूनुस और डीप स्टेट द्वारा बाँग्लादेश में हिंदुओं के खिलाफ अत्याचार

पंकज जगन्नाथ जायसवाल

अगर आप हिंदू हैं और बाँग्लादेश में रहते हैं, तो यह धरती पर नर्क की जीवित परिभाषा है। 1946 के नोआखली दंगों ने बाँग्लादेश में हिंदुओं के खिलाफ मुस्लिम हिंसा की शुरुआत की, जो आज भी जारी है। बाँग्लादेश में हिंदुओं के खिलाफ किए गए जघन्य अपराध दुनियाँ भर के सभी हिंदुओं के लिए एक चेतावनी है। मैं ऐसा क्यों कह रहा हूँ? तथाकथित मानवतावादी समूह या विभिन्न क्षेत्रों की मशहूर हस्तियाँ, विशेष रूप से कई बॉलीवुड सितारे, गाजा, सीरिया, लेबनान में जो कुछ हो रहा है, उसका विरोध करने के लिए समय निकालते हैं, लेकिन पाकिस्तान, अफगानिस्तान और अब बाँग्लादेश में हिंदू अत्याचार के खिलाफ कभी विरोध करते नहीं दिखाई देते हैं। हिंदुओं के खिलाफ पाकिस्तान का अत्याचार खत्म नहीं हो रहा। हालाँकि हमने 1921 का मोपला नरसंहार या 1990 का कश्मीर हिंदू नरसंहार, नहीं देखा है, लेकिन हम अफगानिस्तान और बाँग्लादेश में रोजाना हिंदू अपराधों को देख रहे हैं।

मोहम्मद यूनुस और डीप स्टेट किस तरह हिंदुओं के खिलाफ काम कर रहे हैं ?

क्या तथाकथित कुछ मानवतावादियों, कई भारतीय राजनीतिक दलों और कुछ देशों के लिए हिंदू होना बेकार है, जो स्वार्थ के लिए आतंकवादी संगठनों की सहायता करते हैं? नोबेल शांति पुरस्कार प्राप्त बाँग्लादेश के अंतरिम प्रधानमंत्री मोहम्मद यूनुस की नाक के नीचे हो रहे अत्याचार बाकी दुनियाँ के लिए एक चेतावनी है कि कैसे एक आतंकवादी समर्थक और मानवता विरोधी व्यक्ति को नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। मोहम्मद यूनुस शांतिदूत नहीं, बल्कि मानवता का कत्लेआम करने वाले व्यक्ति हैं। क्या उनका नोबेल पुरस्कार रद्द कर दिया जाना चाहिए? कैसे अमेरिका का डीप स्टेट मोहम्मद यूनुस का इस्तेमाल बाँग्लादेश और हिंदुओं को अपने स्वार्थ के लिए कमजोर करने के लिए कर रहा है। हम उम्मीद करते हैं कि डोनाल्ड ट्रम्प इन डीप स्टेट तत्वों के खिलाफ आक्रामक कार्रवाई करेंगे, जिनके अमेरिका या मानवता के लिए कोई अच्छे इरादे नहीं हैं। पाकिस्तान बाँग्लादेश का अब तक का सबसे बड़ा दुश्मन है, लेकिन पाकिस्तान के साथ यूनुस का संबंध आतंकवादियों के प्रति उनकी सहानुभूति और भारत विरोधी रुख को दर्शाता है। हिंदू संतों, पेशेवरों और व्यापारियों ने बाँग्लादेश के सामाजिक और आर्थिक उत्थान को बढ़ावा देने के लिए कड़ी मेहनत की, कठिन समय के दौरान बड़ी सँख्या में मुसलमानों की सहायता की। हालाँकि इन्हीं व्यक्तियों को क्रूरता से प्रताड़ित किया गया और उनकी हत्या कर दी गई। हिंदुओं को वास्तव में इस पैटर्न और वैचारिक पहलुओं को समझना चाहिए, सरल शब्दों में कहें, तो 'शत्रुबोध' महत्वपूर्ण है।

हिंदुओं के विरूद्ध हुए अपराधों के खिलाफ कई राजनीतिक दलों, विशेष रूप से कई इंडी गठबंधन दलों की चुप्पी सभी हिंदुओं को एक स्पष्ट संदेश देती है—आप इन पार्टियों के लिए एक चुनावी उपकरण से ज्यादा कुछ नहीं हैं और

यदि आप इन ताकतों के खिलाफ एकजुट नहीं होते हैं, तो आप फिर से गुलाम हो जाएंगे। क्या ये पार्टियाँ हिंदुओं पर हो रहे अत्याचारों का मौन समर्थन कर रही हैं? क्या हिंदुओं ने कभी बॉलीवुड हस्तियों को हिंदुओं पर हो रहे अत्याचारों की आलोचना करते सुना है? केवल कुछ ही ने। दुनियाँ का सबसे बड़ा लोकतंत्र करोड़ों हिंदुओं का घर है। हालाँकि बाँग्लादेश में हिंदुओं के खिलाफ मुस्लिम कट्टरपंथियों की बर्बरताभरी हिंसा के बारे में चिंता या घृणा की आवाजें बहुत कम हैं। भारत में कुछ मीडिया आउटलेट इस तरह के अत्याचार पर चर्चा या हाइलाइट कर रहे हैं। हिंदुओं याद रखें कि जबकि हमने कभी किसी के साथ गलत नहीं किया है और भविष्य में ऐसा कभी नहीं करेंगे, हालाँकि हमारा अस्तित्व पूरी तरह से एकता को मजबूत करने, किसी भी अत्याचार के खिलाफ एकजुट होने, बचपन से आत्मरक्षा तकनीकों सहित सनातन सँस्कृति को आत्मसात करने और धर्मातरण से लड़ने पर निर्भर है...यह समय है कि संपूर्ण संत समुदाय, लाखों अनुयायियों के साथ मिलकर दुनियाँ को दिखाएँ कि हम हिंदुओं के साथ किसी भी तरह का अन्याय या मानवता के खिलाफ कुछ भी बर्दाश्त नहीं करेंगे। दुनियाँ की व्यापक भलाई के लिए हिंदुओं की शक्ति देखने दें। सनातन धर्म किसी धर्म का विरोधी नहीं है, बल्कि इसमें मानवता के लिए काम करके विश्व शांति को बढ़ावा देने की क्षमता है। सनातन धर्म का नुकसान मानवता और वैश्विक शांति के लिए एक नुकसान है। इसलिए दुनियाँ में हर कोई जो शांति चाहता है, उसे यूनुस सरकार और उसके लोगों द्वारा हिंदुओं के खिलाफ किए गए अपराधों की कड़ी निंदा और कारवाई करनी चाहिए। यूनुस को यह समझने दें कि वह डीप स्टेट के समर्थन से मानव जाति के खिलाफ काम नहीं कर सकता।

'दुनियाँ को हिंदुओं की स्थिति को किस तरह से देखना चाहिए ?'

ब्रिटिश कंजर्वेटिव सांसद बॉब ब्लैकमैन ने बाँग्लादेश में हिंदुओं के खिलाफ अपराधों की कड़ी निंदा की, साथ ही इस्कॉन के पुजारी चिन्मय कृष्ण दास को जेल में डालने की निंदा करते हुए कहा कि धार्मिक अल्पसँख्यकों को सताया नहीं जाना चाहिए। ब्लैकमैन ने ब्रिटेन की संसद में इस मामले को उठाया, जिसमें अल्पसँख्यक हिंदू आबादी की दुर्दशा को उजागर किया गया, जिसके बारे में उनका दावा है कि उनके घरों, मंदिरों पर आगजनी और हमले सहित जानलेवा हिंसा की जाती है। बॉब ब्लैकमैन ने ब्रिटेन की संसद में बाँग्लादेश में एक हिंदू भिक्षु की गिरफ्तारी पर सवाल उठाए। बाँग्लादेश में इस्कॉन पर प्रतिबंध लगाने के प्रयास को 'हिंदुओं पर सीधा हमला' बताया। दुनियाँ को यह जानने की जरूरत है कि भारत में अल्पसँख्यक सुरक्षित हैं और प्रगति कर रहे हैं, क्योंकि हिंदू बहुसँख्यक हैं। पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बाँग्लादेश दिखाते हैं कि जब हिंदू बहुसँख्यक नहीं होते हैं, तो क्या होता है? पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बाँग्लादेश में अल्पसँख्यक, जहाँ मुस्लिम बहुसँख्यक हैं, कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। जबरन धर्म परिवर्तन, हत्या, बलात्कार और देश से निष्कासन के परिणामस्वरूप अल्पसँख्यक आबादी में नाटकीय रूप से कमी आई है। क्या मानवीय संगठन, बौद्धिक वर्ग और राजनीतिक नेता अल्पसंख्यकों के लिए इस सबसे खराब स्थिति के प्रति अंधे हैं? भारत में इसके विपरीत हो रहा है, जहाँ बहुसँख्यक हिंदू अल्पसँख्यकों को जीवन के सभी पहलुओं में फलने–फूलने की इजाजत दे रहे हैं।

'भारत में संविधान सुरक्षित क्यों है ?'

संविधान के बारे में मूलभूत तथ्य यह है कि डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर का संविधान तब तक सुरक्षित है, जब तक हिंदू बहुसँख्यक हैं। तो क्या हम यह मान लें कि जाति के आधार पर हिंदुओं को विभाजित करने का प्रयास करने वाली राजनीतिक और डीप स्टेट वास्तव में डॉ. अंबेडकर के संविधान का विरोध करती है? वे हिंदुओं की आस्था प्रणाली को कमजोर क्यों करना चाहते हैं? हिंदुओं को व्यापक शोध और विश्लेषण करना चाहिए। वे निःसंदेह हिंदू एकता के महत्व और विभाजित हिंदू समुदाय के निहितार्थों के बारे में जानेंगे।

कृपया याद रखें, हिंदुओं, 'एक हैं तो सेफ हैं, बटेंगे तो कटेंगे।'

pankajjayswal1977@gmail.com

वैदिक संगोष्ठी सम्पन्न

अशोक सिंहल वैदिक शोध संस्थान, गुरुग्राम एवं इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में 15–16 दिसम्बर, 2024 को कृत्रिम मेधा से प्रभावित जीवन के लिए वेदों की शिक्षा विषय पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, समवेत सभागार, जनपथ भवन (निकट वेस्टर्न कोर्ट), जनपथ, नई दिल्ली में संगोष्ठी आयोजित हुई। संगोष्ठी में आठ सत्रों में विभिन्न विषयों पर वेदों में वर्णित तथ्यों की चर्चा हुई। विद्वानों के मत के साथ अध्येताओं द्वारा भी मत निष्पादन किया गया।

मुस्लिम तुष्टिकरण का नया पर्यटन केंद्र बना संभल

संभल-हरिहर मंदिर के सत्य को दबाने के लिए असत्य की राजनीति का सहारा

मृत्युंजय दीक्षित

उत्तर प्रदेश का संभल जिला आजकल चर्चा में है। यहाँ की शाही जामा मस्जिद के पूर्व में प्रसिद्ध हरिहर मंदिर होने के प्रमाण हैं, जिसके कारण यह पुरातात्विक महत्व का स्थल है। हिंदू पक्षकार ने इस स्थल को भगवान श्री हरिहर का मंदिर मानते हुए प्रमाणों के साथ स्थानीय अदालत में इसके सर्वेक्षण की याचिका लगाई थी, जिसे स्वीकार करते हुए स्थानीय न्यायालय ने सर्वे कराने का आदेश जारी किया था। प्रथम चरण का सर्वे हो जाने के बाद कोर्ट कमिश्नर ने न्यायालय से दोबारा सर्वे कराने की अनुमति मांगी थी और वह सहमति भी न्यायालय ने दी, किंतु सर्वे टीम के वहाँ पहुँचने पर अराजक तत्वों की उग्र भीड़ ने उस पर हमला कर दिया। इस हमले के बाद भड़की हिंसा में 5 लोगों की मौत हो गई तथा कई लोग घायल हुए। उपद्रवियों ने पुलिस बलों पर भीषण पत्थरबाजी तथा आगजनी की, जिसके बाद संभल शहर में तनाव व्याप्त हो गया।

संभल की प्रथम दृष्टया पूर्व नियोजित लगने वाली हिंसा के बाद प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने तत्परता दिखाते हुए घटना की जांच के लिए न्यायिक आयोग का गठन कर दिया है, जो अपना कार्य कर रहा है। अब तक सामने आई जानकारी के अनुसार संभल हिंसा एक गहरी व सुनियोजित साजिश थी। घटना स्थल से पाकिस्तान व अमेरिका में बने हथियार मिलने से यह बात और भी पुख्ता हो रही है।

संभल की घटना पर योगी प्रशासन कड़े तेवर अपना रहा है और उसने राजनीतिक दलों के नेताओं के संभल पर्यटन पर 10 दिसंबर 2024 तक रोक लगा रखी है, किंतु सपा और काँग्रेस सहित इंडी गठबंधन के सभी नेता संविधान की किताब को हाथ में लेकर "संभल–संभल" का हल्ला बोल रहे हैं और संभल जाने की रट लगा रहे हैं। संभल प्रशासन का स्पष्ट रूप से कहना है कि अभी जांच चल रही है और नेताओं के दौरे से हालात बिगड़ सकते हैं, फिर भी समाजवादी और काँग्रेसी नेता अपने मुस्लिम वोट बैंक का तुष्टिकरण करने के लिए संभल जाना चाहते हैं।

सपा मुखिया अखिलेश यादव ने संभल हिंसा के लिए पुलिस प्रशासन को दोषी बताते हुए पुलिसकर्मियों पर हत्या का मुकदमा दर्ज करवाने की मांग की है तथा मारे गए मुस्लिम युवकों के परिवारों को पार्टी फंड से पाँच–पाँच लाख रुपए देने की बात भी कही है। लोकसभा में अखिलेश यादव ने पत्थरबाजों को मासूम युवक तक बता डाला और वह भी तब जबकि जांच चल रही है।

लगभग 76 प्रतिशत मुस्लिम आबादी वाले शहर संभल में मुस्लिम वोट बैंक को साधने के लिए सपा मुखिया अखिलेश यादव को आगे निकलते देखकर भला काँग्रेस कैसे शांत रह सकती थी? उसे भी लगा कि मुस्लिम वोट बैंक की बहती गंगा में हाथ धोने का उपयुक्त समय यही है। काँग्रेस ने संसद में संभल मुददे पर सदन में सपा का साथ नहीं दिया, किंतु मुद्दे को भुनाने के लिए राहुल गाँधी व प्रियंका गाँधी वाड्रा संविधान की किताब को हाथ में लहराते हुए संभल चल पड़े, प्रशासन के रोकने पर भी वह अपनी जिद पर अड़े रहे। उन्होंने मीडिया को बताया कि वह प्रशासन से संभल अकेले और पुलिसबल के साथ जाना चाह रहे थे, किंतु प्रशासन ने उन्हें अनुमति नहीं दी।

राहुल गाँधी आखिर संभल क्यों जाना चाहते थे? क्या वह उन पत्थरबाजों का समर्थन करने के लिए संभल जाना चाह रहे थे? उन्होंने सुनियोजित तरीके से पुलिस बल पर

पत्थरबाजी की थी, या वह उन उपद्रवियों का पक्ष लेने जा रहे थे, उन्होंने आगजनी की थी, या फिर ये लोग मुस्लिम लीग का कर्ज उतारने के लिए संभल जाना चाहते थे? क्योंकि ये दोनों ही भाई–बहिन केरल के वायनाड से मुस्लिम लीग के समर्थन के बल पर ही जीतकर आए हैं। काँग्रेस पार्टी मुस्लिम तुष्टिकरण का कोई अवसर अपने हाथ से जाने नहीं देना चाहती है। जब प्रशासन ने गाँधी परिवार को संभल जाने से रोक दिया, तब राहुल गाँधी ने कहा कि वह नेता प्रतिपक्ष हैं, अतः उनका संभल जाना संवैधानिक अधिकार है। मुस्लिम तुष्टिकरण गाँधी परिवार की परंपरा है, जो नेहरु के समय से चली आ रही है।

संभल पर्यटन करने के लिए अड़े गाँधी वाड्रा परिवार ने बाँग्लादेश में हिंदुओं पर हो रही हिंसा की बहुत ही मामूली ढंग से निंदा करके इतिश्री कर ली, क्योंकि वह उनके वोट बैंक नही हैं। यह वही प्रियंका हैं, जिन्होंने मुस्लिम तुष्टिकरण के लिए इजराइल को एक बर्बर देश तक बता डाला था और गाजा के समर्थन में बड़े–बड़े पोस्ट करके मुसलमानों को रिझाया था। ये लोग बहराइच में निर्दोष युवक रामगोपाल मिश्रा की हत्या के समय मुँह में दही जमा कर बैठे थे और संभल के मृतक पत्थरबाजों और उपद्रवियों को पैसे बाँट रहे हैं तथा सरकार से हर उपद्रवी को एक करोड़ देने की मांग कर रहे हैं।

अच्छी बात है कि योगी सरकार बिना विपक्ष के दबाव में आए पूरी तत्परता और निष्पक्षता से काम कर रही है। प्राथमिक जांच तथा प्रत्यक्षदर्शियों के बयानों के आधार पर इस घटना में सपा सांसद जियाउर्रहमान बर्क को पहला आरोपी बनाया है। इसी बीच उन पर एक और मामला भी खुल गया है, जिसमें उनकी कार से रोहन नामक युवक की सड़क हादसे में मौत हो गई थी, कार खुद बर्क ही चला रहे थे और साथ में उनकी पत्नी भी बैठी हुई थी।

भारतीय जनता पार्टी ने कहा है कि राहुल गाँधी अगर नेता प्रतिपक्ष हैं, तो उन्हें निष्पक्ष राजनीति करनी चाहिए, किंतु वह फिलहाल ऐसा करते हुए नहीं दिख रहे। तमिलनाडु के जहरीली शराब कांड में कई निर्दोष मौतें हो गई थीं, तब राहुल ने उनके प्रति संवेदना का एक शब्द तक न ही लिखा और न ही बोला, इसी तरह तमिलनाडु में ही बसपा के प्रदेश अध्यक्ष की हत्या पर भी ये मौन साध गए। हिंदू पर्वों पर मुसलमानों द्वारा किये जा रहे एक के बाद एक हमलों में राहुल पत्थरबाजों व उपद्रवियों के साथ ही खड़े दिखाई दे रहे थे। और तो और वायनाड में भूस्खलन में सैकड़ों लोगों की जान जाने के कई दिनों बाद राहुल वहाँ पर पहुँच सके थे और सहायता के लिए केंद्र सरकार का मुँह ताक रहे थे।

गाँधी परिवार का मुस्लिम वोट बैंक के प्रति प्रेम इतना गहरा है कि बंगाल में संदेशखाली की जिन महिलाओं के साथ पूरा भारत खड़ा था, उन महिलाओं के प्रति भी राहुल–प्रियंका ने कोई संवेदना नहीं दिखाई। आज जो काँग्रेसी नेता संभल–संभल चिल्ला रहे हैं, वह बाबा सिद्दीकी और अतीक अहमद जैसे माफिया की मौत पर खूब आँसू बहाते हैं, किंतु पालघर में संतों की हत्या पर वह कुछ नहीं बोलते हैं। काँग्रेस व इंडी गठबंधन के सभी नेताओं का यही मुस्लिम प्रेम उनका एकतरफा संविधान है।

शायद संभल–संभल करके गाँधी परिवार अपना वो पाप छिपाना चाहता है, जो 1975 में केंद्र व प्रदेश दोनों जगह उसकी सरकारें थीं, तब हुआ था। उस समय संभल में हुए एक बड़े दंगे में 25 हिंदुओं को जिंदा जलाकर मार डाला गया था। इस वीभत्स घटना को मुस्लिम तुष्टिकरण की विकृत राजनीति में डूबे लोग भले ही भूल गये हों, किंतु मृत आत्मायें वह नहीं भूली हैं। संभल जाने से पहले गाँधी परिवार को अपना यह पाप तो अवश्य ही याद कर लेना चाहिए। यह दंगा, राहुल–प्रियंका की जीत की कुंजी, मुस्लिम लीग की ओर से फैलाई गई दो अफवाहों की वजह से ही हुआ था।

फिर प्रदेश में मुलायम सिंह यादव का दौर आया और वर्तमान सांसद जियाउर्रहमान बर्क के पिता शफीकुर्रहमान संभल के सांसद बने। उनके दौर में ही प्रभाव का इस्तेमाल करके संभल के हरिहर मंदिर को पूरी तरह शाही जामा मस्जिद का रूप देने का खेल खुल कर खेला गया। वर्ष 2012 तक हिन्दू मंदिर के परिसर में स्थित एक कुएँ पर पूजा करने के लिए जाते थे, किंतु एक दिन सांसद जियाउर्रहमान के कहने पर सपा नेता अखिलेश यादव ने वहाँ पर पूजा पूरी तरह से बंद करवा दी और बर्क के गुंडो ने वहाँ से हिंदुओं को भगा दिया। इस बीच शहर की डेमोग्राफी में भी बड़ा परिवर्तन हुआ। विरोधी जिस प्रकार छटपटा रहे हैं, उससे स्पष्ट है कि हरिहर मंदिर अधिक दिनों तक छुपा के नहीं रखा जा सकता, हिन्दू पक्ष का दावा नैतिक व ऐतिहासिक तथ्यों के सुदृढ़ आधार पर खड़ा है।

ymritvsk1973@gmail.com

विशेषाधिकार वाली मानसिकता का सामना

शंकर शरण

संभल पुलिस ने वहाँ के सपा सांसद जियाउर्रहमान बर्क और कुछ अन्य मुस्लिम नेताओं पर सांप्रदायिक हिंसा को उकसाने का आरोप लगाया है। आरोपों की सुनवाई तो न्यायालय करेगा, पर सर्वविदित है कि अधिकांश मुस्लिम नेता कानून या नैतिकता की परवाह किए बिना उग्र बयानबाजी करते रहते हैं। असदुद्दीन ओवैसी ने अपने भाषण में मरने–मारने की भाषा का प्रयोग करते हुए मस्जिद सर्वे का आदेश देने वाले न्यायालय पर भी कटाक्ष किया। अधिकांश मुस्लिम नेताओं का अंदाज रहता है कि वे कुछ भी बोल सकते हैं। कोई न्यायालय को चुनौती देता है, तो कोई शरीयत को संविधान से ऊपर कहता है। इसका पता वक्फ और पूजा स्थल अधिनियम को लेकर दिए जा रहे उनके बयानों से चलता है। उलेमा समय–समय पर ऐसे फतवे देते हैं, जो कानूनों के विरुद्ध हैं। जब कानूनी स्थिति अपने पक्ष में लगती है, तब वे दूसरों को संविधान से चलने की सीख देते हैं, अन्यथा पूरी ठसक से कानून, संविधान और समाज की अवमानना करना विशेषाधिकार समझते हैं। संभल की ही घटना लें।

जामा मस्जिद क्षेत्र में सर्वे टीम को पहली बार कोई बाधा न हुई, पर बाद में वहाँ हिंसा की गई। उग्र व्यवहार के बिना कानूनी प्रक्रिया सहजता से चलती। मुस्लिम नेता इसे चुनौती देना ही अपना विशेषाधिकार मानते हैं। वे इस पर गर्व करते हैं। अकबरुद्दीन ओवैसी की तरह कई मुस्लिम नेता धमकी देते रहे हैं, 'पुलिस हटा दो, तब देख लेंगे कि किसमें कितना दम है।' ऐसी ही बात सौ साल पहले मौलाना अकबर शाह खान ने कही थी। उन्होंने महामना मदन मोहन मालवीय को 'पानीपत के चौथे युद्ध' की चुनौती दी थी। इसी अंदाज में निजामुद्दीन दरगाह के प्रमुख ख्वाजा हसन निजामी ने कहा था, 'हिंदुओं में शासन करने की क्षमता नहीं। मुसलमानों ने शासन किया है और मुसलमान ही शासन करेंगे।'

हाल में सैयद शहाबुद्दीन, आजम खान, इमरान मसूद, तौकीर रजा आदि नेता सरकार, सेना, न्यायाधीशों को भी धमकाते रहे हैं। एक बार सैयद शहाबुद्दीन ने धमकी दी थी, 'अरब देशों से कहकर भारत को तेल की आपूर्ति बंद करा देंगे।' ऐसे उग्र बयानों पर कानूनी कार्रवाई तो दूर, खुली भर्त्सना भी नहीं होती। गैर–मुस्लिम नेता चुप रहते हैं। गत सौ सालों से भारतीय राजनीति की यह स्थायी विडंबना है। मौलाना अली बंधु एक से एक हिंसक भाषण देते थे, पर गाँधीजी उन्हें 'परिशुद्ध आत्मा' बताते थे। इस तरह धमकी–भीरुता–हिंसा का स्वचालित दुष्चक्र बनता है।

इस प्रवृत्ति की विस्तृत समीक्षा डॉ. आंबेडकर ने की थी। अपनी पुस्तक 'थाट्स आन पाकिस्तान' में उन्होंने लिखा था, 'मुसलमान अब हिटलर की भाषा का प्रयोग कर रहे हैं और जर्मनी में जिस महत्व की मांग हिटलर ने की थी, वे उसकी आकांक्षा यहाँ कर रहे हैं।' ('संपूर्ण वाङमय', खंड 15)। जिन्ना ने अपने लिए 'सुडेटेन' जैसे हिटलरी विशेषण का गर्व से प्रयोग किया था। यह उल्लेख कर आंबेडकर ने लिखा था, 'इस प्रवृत्ति का दूसरा प्रमाण मुसलमानों द्वारा गोहत्या के अधिकार और मस्जिदों के पास बाजे–गाजे की मनाही की मांग से मिलता है। शरीयत में मजहबी उद्देश्य से गोवध पर कोई बल नहीं दिया गया। इसलिए जब वे मक्का–मदीना जाते हैं, तो गोवध नहीं करते, पर भारत में दूसरे किसी पशु की बलि देकर वे संतुष्ट नहीं होते। सभी मुस्लिम देशों में किसी मस्जिद के सामने से गाजे–बाजे के साथ गुजर सकते हैं, पर भारत में मुस्लिम इस पर आपत्ति करते हैं।'

इस विडंबना–मुस्लिम नेताओं की उग्रता और हिंदू नेताओं की चुप्पी–से भारतीय समाज और शासन की जो दुर्गति हुई है, उसका आकलन असंभव है। इस विडंबना से दोनों समुदायों के बीच अस्वस्थकर भावनाएँ बनी हैं। आखिर ग्रंथि जिस जगह हो, इलाज उसी का आवश्यक होता है। उपेक्षा से वह गांठ जड़ीभूत होती है। जब देश का कानून उत्तेजक भाषणबाजी को अपराध बताता है, तो जो भी ऐसा करे, उसे दंडित होना चाहिए, लेकिन आम तौर पर मुस्लिम नेताओं पर वैसे भाषणों के लिए शायद ही कभी कार्रवाई होती हो। फलतः मुस्लिम नेता अपने गुमान में और भी चढ़ते रहते हैं। यदि हिंदू नेता आंबेडकर की तरह, दृढ़तापूर्वक केवल शाब्दिक आलोचना भी करें, तो विशेषाधिकार जताने वाले मुस्लिमों पर लगाम लगे। तभी यहाँ मानवतावादी न्यायप्रिय मुस्लिम नेता भी उभरते।

जोर–जबरदस्ती का अंदाज ठुकराने पर मुस्लिम नेता कहीं भी मनमानी चलाने में असमर्थ हैं। सऊदी अरब में प्रमुख इस्लामी स्थानों की रक्षा अमेरिकी संरक्षण में होती है। अकूत आर्थिक संसाधन के बाद भी तमाम मुस्लिम देशों की सेनाएँ मिलकर एक इजरायल को नहीं हरा सकतीं। भारत पर भी पाकिस्तान के चार–चार हमले हार में बदले। मुस्लिम नेताओं की ठसक दूसरों की चुप्पी से ही चलती है, अन्यथा स्वामी दयानंद, श्रद्धानंद, श्रीअरविंद या आंबेडकर जैसे नेताओं ने जब भी उनकी घमंडी मानसिकता को ठुकराया, तो उन्हें उत्तर नहीं सूझा।

उलटे मुस्लिम नेताओं ने वैसे नेताओं को आदर दिया, जो उनसे आँख मिलाकर बात करते थे। उदाहरण के लिए स्वामी दयानंद को दी गई सर सैयद अहमद की श्रद्धांजलि। इसकी तुलना में किसी मुस्लिम नेता ने गाँधीजी को रंच मात्र भी मान नहीं दिया, जो आजीवन हिंदुओं के हित कुर्बान करते रहे। इस्लामी श्रेष्ठता के स्थान पर मानवीय समानता को सामने रखना ही सही नीति है। घमंडी अंदाज को ठुकराकर केवल समान अधिकार की टेक पर ही विशेषाधिकारी मानसिकता खत्म की जा सकती है। उस पर चुप्पी साधने या झुकने से उसे बढ़ावा ही मिलता है। इससे आगे और भी अधिक क्षति होनी तय है। जिस दिन भारतीय शासन बिना मजहब, जाति, क्षेत्र देखे हर उत्तेजक भाषण पर समान रूप से कठोर कार्रवाई करने लगेगा, उसी दिन यह समस्या खत्म होनी आरंभ होगी।

इस्लामी मत भी बौद्ध, ईसाई या हिंदू मत के समान ही आदर या आलोचना का पात्र है–न कम, न ज्यादा। इस टेक से तनिक भी विचलन उस विशेषाधिकारी मानसिकता को ही बढ़ाता है, जिसने गत सौ सालों में लाखों लोगों की बलि ली है। इसे बंद करने के लिए सही उपाय शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक है। इसे केवल कानून–व्यवस्था का विषय मानना भूल है। मुस्लिम नेताओं की आक्रामक भाषा मनोवैज्ञानिक दबाव है, जिससे हिंदू नेता भ्रमित होते हैं। उन्हें सहजता, किंतु दृढ़ता से इसे ठुकराना होगा।

हिन्दू जागृति विश्व का सबसे कठिन कार्य

दिव्य अग्रवाल (लेखक व विचारक)

समूचा विश्व देख रहा है की सनातनी हिन्दू समाज को किस प्रकार इस्लामिक मजहबियों द्वारा प्रताड़ित किया जा रहा है, यह अमानवीय कृत्य पिछले 1400 वर्ष से होता आया है, लेकिन इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के माध्यम से यह सत्यता अब उजागर हो रही है। बहुत सारे धर्मगुरु और राजनेता इस पीड़ा को अपने–अपने शब्दों में व्यक्त कर रहें हैं। जनसत्तादल लोकतांत्रिक के अध्यक्ष, कुंडा विधायक राजा भैया उनमें से एक हैं, जो बाँग्लादेश की भयावह स्थिति को देखते हुए भारत के हिन्दुओं के लिए भी अपनी चिंता निरंतर व्यक्त कर रहे हैं। दुनियाँ का सबसे कठिन कार्य हिन्दुओं को अपने धर्म के प्रति जागृत करना है। राजा भैया के इस कथन में एक सामान्य हिन्दू की गहरी पीड़ा, वेदना है। हो भी क्यों न, जिन्होंने मानवता का वीभत्स नरसंहार किया, उन हमास आतंकियों/नरपिसाचों तक का समर्थन इस्लाम के नाम पर विश्व के सभी मुसलमानों ने किया। इतना ही नहीं जय फिलिस्तीन के नारे भारतीय संसद में मुस्लिम सांसदों ने लगा दिए, हिन्दू समाज के स्वघोषित बुद्धिजीवियों ने कहा कि फिलिस्तीन के साथ अनुचित हो रहा है, पर जब बाँग्लादेश में निरपराध हिन्दुओं के बच्चों को लाठियों से पीट–पीट कर मारा जा रहा है, बहन बेटियों के साथ सामूहिक बलात्कार हो रहा है, और तब तक हो रहा है जब तक उनकी मृत्यु न हो जाए, बाँग्लादेश की प्रत्येक आपदा में सेवा करने वाले इस्कॉन मंदिर के अध्यक्ष चिन्मय दास जी को प्रताड़ित किया जा रहा है, तो भारत के उन्हीं हिन्दुओं के मुँह में दही जम गया है। भारतीय राजनीति में कोई ऐसा विपक्षी नेता नहीं, जो संसद से, विधानसभा से, बाँग्लादेश के हिन्दुओं की आवाज पटल पर रख सके। ऐसा भी क्या भाईचारा, ऐसा भी क्या राजनितिक तुष्टिकरण, जो अपनी उन बहन बेटियों की पीड़ा को भी नजरअंदाज कर दें, जिनकी दुर्गति का एक मात्र कारण उनका हिन्दू होना है। शायद राजा भैया इसी पीड़ा को अतःकरण में धारण कर बागेश्वर धाम के अधिष्ठाता श्री धीरेन्द शास्त्री जी की हिन्दू एकता पद यात्रा में सम्मिलित हुए होंगे। इस्कॉन मंदिर के अनुयायी पुरे विश्व में हैं, आज उन सबको एक होकर हिन्दू रक्षार्थ में कार्य करने होंगे, कहाँ हैं हमारे नागा साधू, कहाँ है वो महामंडलेश्वर, जो शाही सवारियों से कुम्भ करने जाते हैं? यदि कुम्भ आयोजित करने वाले सभी साधु–संत सनातन धर्म रक्षार्थ एकत्रित होकर बाँग्लादेश की मजहबी कटटरपंथी सरकार के विरुद्ध आवाज उठाएंगे, तभी भविष्य में भारत का कुम्भ कर पाएंगे, अन्यथा निश्चित जो हाल आज बाँग्लादेश का है, वही हाल कल भारत का होगा, क्यूंकि भारतीय कठमुल्ले तो इस प्रतीक्षा में हैं कि कब तख्ता पलट हो और कब गजवा–ए–हिन्द हो।

divyelekh@gmail.com

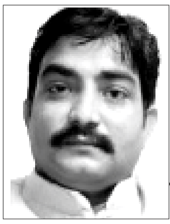

हिंदुओं पर अत्याचार हो रहे हैं लेकिन सेक्युलर गैंग कह रही है कि सरकार ध्यान हटा रही है

डॉ. प्रवेश कुमार

पिछले कई दिनों से बाँग्लादेश में हिन्दू समाज पर असँख्य अत्याचार हो रहे हैं। ऐसे में जब भारत का हिन्दू समाज इसको लेकर आवाज उठा रहा है, तो काँग्रेस का कहना कि सरकार मुद्दों से ध्यान भटका रही है। मेरा प्रश्न सेक्युलर गैंग से यह है कि हिन्दू सुरक्षा कोई मुद्दा नहीं है क्या? अभी कुछ ही दिनों पहले बीएसपी मुखिया मायावती जी ने कहा कि "काँग्रेस ने बंगाल की हिन्दू बहुल हिस्से को इसलिए पाकिस्तान को दे दिया, क्योंकि वहाँ की जनता ने बाबा साहब अम्बेडकर को संविधान सभा में चुनकर भेजा था। मायावती जी का यह कहना है कि 'बहुसँख्यक हिन्दू आबादी वाले क्षेत्र को सिर्फ इसलिए पाकिस्तान को दिया गया, क्योंकि वहाँ हिन्दुओं में दलित आबादी बहुलता में थी।' बाबा साहब अम्बेडकर के प्रति काँग्रेस की कुत्सित मानसिकता के कारण बंगाल के हिन्दू बहुल क्षेत्रों को भी पाकिस्तान को दे दिया गया। जोगेन्द्र नाथ मण्डल जैसे दलित नेताओं की काँग्रेस में होती उपेक्षा ने उन्हें पाकिस्तान और मुस्लिम लीग के ही साथ जाने को मजबूर किया होगा। आज बाँग्लादेश में जिस प्रकार हिन्दुओं पर हमले हो रहे हैं, ऐसे में मायावती जी की यह बातें ठीक ही लग रही हैं। 1947 में जब भारत का विभाजन हुआ और पाकिस्तान बना, तब पूर्वी पाकिस्तान में सम्पन्न हिन्दू तो भारत में आ गया। दिल्ली के चितरंजन पार्क जैसे पॉश कॉलोनी में उसे रहने को जगह मिली, लेकिन गरीब, दलित, वंचित वर्ग भारत नहीं आ पाया। उसने जोगेन्द्र नाथ मण्डल, जो उनके नेता और पाकिस्तान के पहले कानून मन्त्री थे, की बातों पर विश्वास किया और हिंदुस्थान आने के बजाए पाकिस्तान चुना। यही भूल हिन्दू समाज की थी, जिसका भुगतान आज तक हिन्दू समाज कर रहा है। इन हिन्दुओं में भी पददलित समाज की स्थिति तो ओर बुरी है। हम देखें कि भारत के विभाजन के समय पाकिस्तान की हिन्दू जनसँख्या लगभग 44 प्रतिशत थी, जिसमें 14.6 प्रतिशत पश्चिम पाकिस्तान में, वहीं पूर्वी पाकिस्तान जो आज बाँग्लादेश है, इसमें 28.5 प्रतिशत थी। पाकिस्तान व बाँग्लादेश दोनों की कुल हिन्दू आबादी का 75 प्रतिशत दलित जातियाँ ही हैं। जो काँग्रेस समेत विपक्षी पार्टी दलित हितैषी होने का ढोंग करती हैं, उनसे पूछना चाहिए कि क्या बाँग्लादेश का दलित, दलित नहीं है?

क्या इससे पूर्व जम्मू कश्मीर के वाल्मीकि समाज के लोग दलित नहीं थे? जो उन्हें केवल सफाई का ही काम करने की स्वीकृति थी, धारा 370, 35–ए हटने से पूर्व, लेकिन तब भी काँग्रेस समेत समस्त विपक्ष की आवाज नहीं निकली। वहीं आज बाँग्लादेश में हिन्दुओं पर होते अत्याचारों पर भी इनकी चुप्पी है। बाँग्लादेश में 1990 के बाद से ही हिन्दू मंदिरों पर हमलों की घटना आम रही है। 2010 में दुर्गा पूजा में घुस कर मूर्तियों को खण्डित करने का प्रयास हुआ। वहीं विरोध करने पर हिन्दुओं को पीटा गया। दक्षिण बंगाल, हबीबगंज जिला, बीरगंज जिला, गोपालपुर उपजिला पटुआखली, चटगांव नानुआर, चाँदपुर जिला, ऐसे असँख्य जिलों में दुर्गा पूजा के दौरान जिहादियों के द्वारा हमले कर हमारे भगवानों की मूर्तियों को खंडित किया जाता है। हिन्दू समाज पर हमले आम हैं। बाँग्लादेश में वर्ष 2013 में एमनेस्टी इंटरनेशनल ने कहा कि वर्ष 1990 के बाद बाँग्लादेश में कट्टरवादियों के हिन्दुओं पर हमलों ने उनकी सँख्या को कम किया है।' इसी का परिणाम है कि बाँग्लादेश जब बना, उस समय वहाँ की हिन्दू आबादी 28.5 प्रतिशत थी, जो आज घट कर 7.95 प्रतिशत रह गई है।

हिन्दुओं की सँख्या में तेजी से गिरावट हुई है, जिसमें बाँग्लादेश से प्रत्येक वर्ष लाखों की सँख्या में हिन्दुओं का पलायन एक बात है। वहीं कन्वर्शन एक सबसे बड़ा कारण माना जा सकता है। बहुसँख्यक हिन्दू आबादी गरीब, वंचित, दलित है, जो पलायन के लिए भी सक्षम नहीं है। बाँग्लादेश में दलित हिन्दुओं की स्थिति के बारे में एक अध्ययन में पाया गया कि लगभग 29 प्रतिशत बच्चे आज भी स्कूली शिक्षा में शामिल नहीं हुए हैं, वहीं 68 प्रतिशत यह बच्चे बीच में ही स्कूल छोड़ देते हैं।

पूर्वी पाकिस्तान में ही हमले और

अत्याचार हो रहे हैं, ऐसा नहीं है कि यह सब अभी होना शुरू हुआ है, बल्कि जब हम जोगेन्द्र नाथ मंडल का वह पत्र पढ़ते हैं, जो उन्होंने भारत वापस आने पर लिखा था। मंडल लिखते हैं कि पाकिस्तान के कायदे आजम के 11 अगस्त 1947 के भाषण ने हिन्दुओं में यह विश्वास पैदा किया कि पाकिस्तान में उनके साथ रिलीजन के आधार पर कोई भेद नहीं होगा, लेकिन कुछ ही महीनों में पश्चिम व पूर्वी पाकिस्तान के कई हिन्दू अल्पसँख्यक क्षेत्रों में हिन्दुओं पर हमलों की घटनाएँ होने लगी। मंडल खुद लिखते हैं कि गोपालपुर के निकट दीघलकुल गाँव में मुस्लिम मछुआरे ने हिन्दू मछुआरे की फर्जी कंप्लेंट पुलिस में लिखवा दी। इसी कंप्लेंट के आधार पर पुलिस ने इस हिन्दू परिवार पर यातनायें देना प्रारंभ कर दिया, जिसमें परिवार की गर्भवती महिला का गर्भपात हो गया। इस सब पर पुलिस की कोई कार्यवाही नहीं हुई, ऐसी ही कई घटनाएँ बारिसाल, राजश्री, खुलना आदि में भी हुई, लेकिन प्रशासन की तरफ से कोई कार्यवाही नहीं हुई ।

यह पाकिस्तान के पूर्वी और पश्चिम दोनों ही की स्थिति थी, आज भी लाखों हमले हिन्दुओं पर और उनके पूजा स्थलों पर जारी हैं। इन सब पर विपक्ष सिर्फ मुस्लिम तुष्टिकरण के चलते चुप्पी साध लेता है, लेकिन दुनियाँ के किसी भी देश में मुसलमानों पर कोई हिंसा का विषय आ जाए, तो फिर क्या संसद में भी जय फिलिस्तीन के नारे लग जाते हैं। हिन्दू मंदिरों, हिन्दू समाज पर हमले भारत में भी होते हैं, लेकिन काँग्रेस समेत अन्य विपक्षी दलों की चुप्पी ही रहती है। बल्कि अभी हाल के वर्षों में ही मुस्लिम कट्टरवादियों द्वारा कितनी ही सँख्या में हिन्दूओं की हत्या की गई है। वर्ष 2018 में अंकित सक्सेना को मुस्लिम कट्टरवादी पिता ने इस लिए मार दिया, क्यूँकि अंकित और उनकी मुस्लिम बेटी आपस में प्यार करते थे। 17 मार्च 2021 को सुमित कुमार ने खुशी नाम की लड़की जो कि एक मुस्लिम मत को मनाने वाली है, से शादी कर ली तो मुस्लिम वर्ग ने इसे अपने रिलिजन के खिलाफ माना और 20 मार्च को उसके घर और मोहल्ले पर हमला कर दिया। 10 जुलाई को शुभम नामक दलित युवक से मुस्लिम दबंग युवकों से गली में जुआ खेलने को लेकर कहा सुनी हुई, इसमें मुस्लिम युवकों द्वारा उसको पीट–पीट के मार दिया गया। वहीं राहुल राजपूत केवल थोड़ी तेज आवाज में माता के भजन सुन रहा था। बस इतने पर ही उसे मुस्लिम युवा आतंकियों द्वारा मार दिया गया। 21 अगस्त 2018 में दिल्ली में संजय कुमार ने अपने पड़ोसी रुकसाना से जब शादी की, तो रुकसाना के परिवार वालों ने संजय कुमार पर मुस्लिम मत में धर्मान्तरित होने का दबाव डाला, परंतु संजय ने ऐसा नहीं किया, तो उसे मार दिया गया। इसी प्रकार जनवरी 2018 में उत्तर प्रदेश के मेरठ में इस्लाम धर्म ना अपनाने को लेकर मुस्लिम कट्टरवादियों द्वारा महिला का गैंगरेप किया गया। इसी वर्ष एक दलित परिवार की शादी में कुछ मुस्लिम युवकों ने हंगामा किया, लड़कियों से छेड़छाड़ की। मई 2018 में तमिलनाडु के भूमि नायक्कन पट्टी गाँव में मुसलमानों ने हिन्दू अनुसूचित जाति वर्ग के अंतिम संस्कार पर रोक लगा दी, क्योंकि वह उनकी गली से होकर निकलते थे। जनवरी 2018 में हाथरस में मस्जिद के आगे एक अनुसूचित जाति के युवक अमित गौतम को पीट–पीट के मुस्लिम युवकों ने मार डाला। हीना तलरेजा, प्रशांत पुजारी, वी. रामलिंगम, परेश मेस्ता, देवनूर सत्यनारायण, चंदन गुप्ता, कमलेश तिवारी, खेतराम भील, नीलेश तेलगड़े, भारत यादव, भावेश कोली और अब कन्हैया लाल ऐसे पाँच दर्जन से अधिक नाम हैं, जिनकी मुस्लिम वर्ग द्वारा हत्या की गई है। लेकिन इन सब पर काँग्रेस की चुप्पी है और अगर विश्व हिन्दू परिषद जैसे संगठन इसे उठाये, तो हम समाज का ध्यान भटका रहे हैं। भारत के इतिहास में 90 के दशक में 300 हिंदुओं को कश्मीर में मारा गया, 1992 में मुस्लिम तुष्टिकरण के चलते उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री द्वारा हजारों निहत्थे हिंदू कारसेवकों पर गोली चलवाई गई। 1998 के दौर में जम्मू–कश्मीर के कई जिलों एवं हिमांचल के चंबा जिले में सैकड़ों की सँख्या में मुसलमानों ने हिंदुओं को मारा था। क्या गुजरात के गोधरा को भूला जा सकता है? जहाँ 59 रामभक्तों को जला दिया गया। जिहादी अब्दुल रशीद हिन्दू संत एवं स्वतंत्रता सेनानी स्वामी श्रद्धानंद की हत्या सिर्फ इसलिए कर देता है, क्योंकि वे शुद्धीकरण आन्दोलन के तहत मतांतरित मुस्लिमों को पुनः हिन्दू समाज में ला रहे थे। हजारों, लाखों हमारे हिन्दू भाइयों और उनके परिवारों को केरल में मोपलाओं द्वारा मारा गया, डाइरेक्ट ऐक्शन के नारे के तहत मुस्लिम वर्ग ने कितने हिन्दू समाज के परिवारों को उजाड़ा, भारत पाकिस्तान विभाजन की त्रासदी और हिन्दूओं का नरसंहार क्या कोई भूल सकता है? स्वयं गाँधी को कहना पड़ा कि मुस्लिम धींगा–धँगी करने वाले हैं। डॉ. अम्बेडकर स्वयं अपनी पुस्तक थाटस आन पाकिस्तान में लिखते हैं कि यह तथ्य है कि कई प्रसिद्ध हिंदू, जिनके लेखों से या शुद्धि आन्दोलन में हिस्सा लेने से मुसलमानों की धार्मिक भावनाएँ आहत हुई हैं। उनकी हत्या मुस्लिम कट्टरपंथियों ने कर दी, सबसे पहले स्वामी श्रद्धानंद को अब्दुल रशीद ने 23 दिसम्बर 1926 को गोली मारी, जब वह बीमार थे और बिस्तर पर थे। फिर दिल्ली में आर्य समाजी नानक चंद की हत्या की, उसके बाद 6 अप्रैल 1929 में इल्मुदिन ने राजपाल की हत्या की, जब वे अपनी दुकान पर बैठे थे। फिर 1934 में नाथूरमाल शर्मा की कोर्ट के अंदर हत्या की, जब वे इस्लाम पर एक टेम्पलेट के प्रकाशन के खिलाफ केस के दौरान कोर्ट में सुनवाई का इंतजार कर रहे थे। 1938 में हिन्दू महासभा के सचिव खन्ना पर जानलेवा हमला हुआ और वह मौत से बाल–बाल बचे। अब अगर हिन्दू समाज इन विषयों को उठाये, तो विपक्ष कहता है कि हम ध्यान भटका रहे हैं।

1998 के दौर में जम्मू–कश्मीर के कई जिलों एवं हिमांचल के चंबा जिले में सैकड़ों की सँख्या में मुसलमानों ने हिंदुओं को मारा था। क्या गुजरात गोधरा को भूला जा सकता है? जहाँ 59 रामभक्तों को जला दिया गया। जिहादी अब्दुल रशीद हिन्दू संत एवं स्वतंत्रता सेनानी स्वामी श्रद्धानंद की हत्या सिर्फ इसलिए कर देता है, क्योंकि वे शुद्धीकरण आन्दोलन के तहत मतांतरित मुस्लिमों को पुन: हिन्दू समाज में ला रहे थे।

(लेखक सहायक प्रोफेसर, तुलनात्मक राजनीति और राजनीतिक सिद्धांत का केन्द्र, स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।)

(वीर अर्जुन से साभार)

ललित गर्ग

साँस्कृतिक पहचान को कुचलने की कुचेष्टाएं कब तक?

भारत की समृद्ध साँस्कृतिक, धार्मिक एवं आर्थिक विरासत को कुचलने की चेष्टाएँ अतीत से लेकर वर्तमान तक होती रही हैं। बहुत बड़ा सच है कि अगर किसी देश को नष्ट करना है, तो उसकी साँस्कृतिक पहचान को खत्म कर दो। देश अपने आप नष्ट हो जाएगा। भारत पर हमला करने वाले विदेशी आक्रांताओं ने यही किया। इस्लामी आक्रांताओं ने न सिर्फ धन–संपदा लूटी, बल्कि भारत की साँस्कृतिक और धार्मिक पहचान को खत्म करने के लिए बड़े पैमाने पर मंदिरों और धार्मिक स्थलों को तोड़ कर मस्जिदें बना दीं। भारतीय सभ्यता एवं सँस्कृति के शत्रु एवं तथाकथित धर्म–निरपेक्षता की राजनीति करने वाले नेता इस बात को अधिक बेहतर समझते हैं, अतः उन्होंने इतिहास को झुठलाने, धुंधलाने और काल्पनिक बातें गढ़ने एवं फैलाने पर ध्यान केंद्रित किया। हमारे नेताओं–नीतिकारों की नासमझी के कारण ही इसमें वे सफल भी रहे हैं। क्या यह स्थिति बदल रही है? देश में कुछ लोग सही इतिहास को उजागर करने एवं ऐतिहासिक विरासत को धुंधलाने एवं कुचलने की कुचेष्टाओं का परिमार्जन करने के लिये तत्पर हुए हैं, इसी का परिणाम है कि सैकड़ों वर्षों की गुलामी के बाद आज सनातन सँस्कृति का पुनरुद्धार हो रहा है। अयोध्या, काशी, मथुरा के बाद संभल और अजमेर दरगाह जैसे मामलों में साक्ष्यों और दस्तावेजों के आधार पर भारत की साँस्कृतिक पहचान के प्रतीकों को हासिल करने के प्रयास हो रहे हैं। ऐसे प्रयासों के द्वारा अशांति फैलाने का लक्ष्य नहीं है, बल्कि इतिहास की बड़ी भूलों को सुधारना एवं वास्तविक तथ्यों को सामने लाना है। लेकिन इसमें एक बड़ी बाधा है, पूजा स्थल अधिनियम 1991, जो देश में आजादी से पहले से मौजूद धार्मिक स्थलों, जुड़े तथ्यों की खोजबीन की भी अनुमति नहीं देता है? क्या इसके चलते देश में आक्रांतवादी सोच एवं देश की विरासत को धुंधलाने की कोशिश पर पर्दा ही पड़ा रहेगा? ऐतिहासिक अन्याय, अत्याचार एवं राष्ट्र–विरोधी सोच एवं सच्चाई, तो सामने आनी ही चाहिए। इस देश में उन विघटनकारी एवं सँस्कृति– विरोधी लोगों की मर्जी कब तक चलती रहेगी? कब तक बात–बेबात हंगामा होता रहेगा? कब तक साँस्कृतिक पहचान को बेमानी साबित करने के षड्यंत्र होते रहेंगे?

इस सच से इंकार नहीं किया जा सकता कि इतिहास से न केवल छेड़छाड़ हुई है, बल्कि समृद्ध साँस्कृतिक इतिहास को निस्तेज भी किया गया है। इसी बात को उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने उजागर करते हुए कहा कि हमारे इतिहास के साथ छेड़छाड़ की गई है। अतीत में यह बात प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से लेकर गृहमंत्री अमित शाह भी कह चुके हैं, यह बात पूर्व में भी बार–बार अनेक नेताओं ने कही है, लेकिन इतिहास को सही रूप में पेश करने का काम नहीं हो पा रहा है और वह भी तब, जब सभी इससे परिचित हैं कि सच्चे इतिहास की जानकारी के अभाव में लोगों के बीच नासमझी की खाई चौड़ी ही होती है, झूठे इतिहास को ही लोग सच मानने से उनकी अपनी परम्परा एवं इतिहास के प्रति आस्था की बजाय घृणा बढ़ती है। अपनी इतिहास एवं सँस्कृति की विलक्षण एवं विशेषताओं से दूरी बनाकर झूठे इतिहास के कसीदें पढ़ने से राष्ट्र के प्रति गौरव का भाव क्षीण होता है। ऐसी स्थितियों में राष्ट्रीय एकता, समृद्ध साँस्कृतिक विरासत के गौरवपूर्ण क्षण कैसे सामने आ सकते हैं। झूठे इतिहास के कारण लोग संगठित कैसे हो सकते हैं? उनके स्वर विपरीत ही होते हैं, जिससे एक–दूसरे से जुड़ना तो दूर आपसी द्वेष, नफरत एवं द्वंद्व की स्थितियाँ ही राष्ट्र पर हावी होती हैं। सही इतिहास जानने की इस महत्ता से हमारे नीति–निर्माता अनभिज्ञ रहे हैं। अन्यथा इस विषय पर यहाँ इतनी दलबंदी न होती। हमें एक असहिष्णु, उन्मादी एवं कट्टरवादी समाज बनने के रास्ते पर ही नहीं, बल्कि भीतर से ज्यादा से ज्यादा विभाजित एवं कमजोर समाज बनने के रास्ते पर धकेला जा रहा है।

इस तरह की स्थितियाँ एवं मुहिमें देश की एकता एवं अखण्डता पर आघात करती हैं।

भारतीयों ने गणित व खगोल विज्ञान पर प्रामाणिक व आधारभूत खोज की। शून्य का आविष्कार, पाई का शुद्धतम मान, सौरमंडल पर सटीक विवरण आदि का आधार भारत में ही तैयार हुआ। वसुधैव कुटुम्बकम का विचार इसी देश ने किया। अहिंसा यहाँ की जीवनशैली का सौन्दर्य रहा है, विविधता में एकता को हमने जीकर दिखाया है, लेकिन हमारी उदारता को आक्रांताओं एवं विभाजनकारी ताकतों ने हमारी कमजोरी मान लिया है। यही कारण है कि तात्कालिक एवं अतीत की कुछ नकारात्मक घटनाओं व प्रभावों ने जो धुंध हमारी साँस्कृतिक जीवन–शैली पर आरोपित की है, उसे सावधानी पूर्वक हटाना होगा। आज आवश्यकता है कि हम अतीत की साँस्कृतिक धरोहर को सहेजें और सवारें तथा उसकी मजबूत आधारशिला पर खड़े होकर नए मूल्यों व नई सँस्कृति को निर्मित एवं विकसित करें। ऐसा करके ही हम नया भारत–सशक्त भारत निर्मित कर पायेंगे। समृद्ध सँस्कृति भारत की एक विरासत है। इसमें धर्म, अध्यात्मवाद, ललित कलाएँ, ज्ञान–विज्ञान की विविध विधाएँ, नीति, दर्शन, विधि, विधान, जीवन प्रणालियाँ और वे समस्त क्रियाएँ और कार्य हैं, जो उसे महान बनाती हैं। समय–समय पर इसका विविध सँस्कृतियों के साथ संघर्ष, मिलन, परिवर्तन, परिवर्धन और आदान–प्रदान हुआ है। भारतीयों की अनेक भावनाओं पर शताब्दियों से समय–समय पर आती रहने वाली विविध जातियों ने बहुत पहले से ही अपना न्यूनाधिक प्रभाव डाल रखा था। परंतु इस्लाम के आ जाने पर भारतीय सँस्कृति में एक हलचल सी मच गयी, साँस्कृतिक विरासत को ध्वस्त करने के सलक्ष्य प्रयत्न हुए, कला, धार्मिकता, शिल्प के मन्दिरों को ध्वस्त करके मस्जिदों का निर्माण कराया गया। लेकिन इन ऐतिहासिक भूलों को सुधारने का अवकाश तो हमेशा से रहा है।

सर्वोच्च न्यायालय ने संभल मस्जिद मामले में 29 नवंबर 2024 को स्थानीय अदालत की कार्यवाही पर अस्थायी रोक लगा दी। इस मामले में विपक्षी दल विशेषतः काँग्रेस एवं समाजवादी पार्टी उत्तरप्रदेश सरकार को जबरन घसीट रही है, जबकि सर्वोच्च अदालत शांति बनाए रखने के लिए मामले में इलाहाबाद उच्च न्यायालय को सुनवाई करने का निर्देश दिया है। 24 नवंबर को अदालती निर्देश पर हुए सर्वे के दौरान खूनी हिंसा, जिसमें चार लोगों की मौत हो गई थी, उसके बाद सर्वोच्च न्यायालय ने जो निर्णय दिया, उसका मर्म यह है कि मामले में फैसला इस बात पर निर्भर करेगा कि क्या सच है, या, फिर कौन समुदाय कितना उपद्रव करता है और वह शासन–व्यवस्था के लिए कितनी बड़ी चुनौती बन सकता है। अर्थात चाहे 'अन्याय' कितना भी बड़ा हो, अदालत 'न्याय' से अधिक 'शांति–सद्भावना' को वरीयता देगी। देर–सबेर न्याय होता हुआ देखा भी गया है, अयोध्या में बना श्रीराम मन्दिर इस का उदाहरण है।

आक्रांताओं द्वारा नष्ट किए गए धार्मिक स्थल सिर्फ धार्मिक प्रतीक नहीं हैं, बल्कि वे भारत की सभ्यता एवं सँस्कृति के ऊँच प्रकाश के केन्द्र हैं। काँग्रेस ने इनके दमन का ही सिलसिला जारी रखा। इस तरह इतिहास का मिथ्याकरण और देश की नई पीढ़ी को उनके पूर्वजों के वास्तविक अनुभवों को जानने से वंचित रखना हर हाल में गलत है, त्रासद है और विडम्बनापूर्ण है। कठोर वास्तविकताएँ एवं समृद्ध साँस्कृतिक विरासत भारत का यथार्थ है, तो अप्रिय प्रवृत्तियाँ, विभाजनकारी सोच एवं समृद्ध साँस्कृतिक विरासत का विध्वंस भी बड़ा यथार्थ है। मुगल शासक हो या अँग्रेजी शासक या आजादी के बाद की सरकारें –राजनीतिक उद्देश्यों एवं वोट की राजनीति के चलते मुस्लिम तुष्टीकरण को अपनाया। यही कारण है कि भारत पर अन्याय–अत्याचार करने एवं आक्रांता बन देश को लुटने वालों को हमने हीरो बनाया और उनके नाम पर प्रमुख मार्गों का नामकरण किया, पाठ्य–पुस्तकों में उनको महिमामंडित किया। लेकिन यहाँ लंबे समय से इतिहास और वर्तमान के अप्रिय प्रसंगों पर चुप्पी की परंपरा बनी हुई है। अब यह चुप्पी टूट रही है, तो निश्चित ही दूध का दूध एवं पानी का पानी होकर रहेगा। भारत अपनी समृद्ध विरासत को पुनः नये शिखर पर स्थापित कर पायेगा। मस्जिदें हों, या, अन्य ऐतिहासिक धरोहर–उनके झूठे इतिहास एवं तथ्यों और उनके तमाम प्रचलित निष्कर्ष निराधार हैं, भ्रामक हैं, बेबुनियाद हैं, जिन्हें राजनीतिक उद्देश्य से प्रचारित किया गया। जबकि सच्ची बातों और कटु स्मृतियों का दमन हुआ। हालांकि ऐसी स्मृतियाँ मिटती नहीं, वे तो ज्वालामुखी होकर फटती हैं, सच को सामने लाती हैं।

lalitgarg11@gmail.com

भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती
एक ऐतिहासिक प्रेरणा

– राम कुमार सिंह

भारत के समृद्ध इतिहास में भगवान बिरसा मुंडा का नाम एक ऐसे वीर योद्धा और समाज–सुधारक के रूप में अंकित है, जिन्होंने अपने जीवन को जनजातीय समाज की उन्नति और उनके अधिकारों के लिए समर्पित कर दिया। देश में प्रत्येक वर्ष 15 नवम्बर को उनकी जयंती पर भारत में राष्ट्रीय जनजातीय गौरव दिवस मनाया जाता है। यह दिन न केवल उनके बलिदान और योगदान को याद करने का है, बल्कि यह जनजातीय समुदाय की प्राचीन साँस्कृतिक विरासत, अनवरत संघर्ष और स्वाभिमान का उत्सव भी है।

भगवान बिरसा मुंडा का जीवन और उनका संघर्ष – बिरसा मुंडा जी का जन्म 15 नवम्बर 1875 को झारखंड के उलीहातू गाँव में एक साधारण मुंडा परिवार में हुआ था। उनका जीवन अत्यंत कठिनाइयों से भरा था और उन्हें बाल्यावस्था से ही आर्थिक संघर्षों का सामना करना पड़ा। सामाजिक असमानता, अत्याचार और विदेशी शासकों द्वारा जनजातियों पर निरंतर हो रहे शोषण ने बिरसा मुंडा के अंतर्मन को विद्रोह की भावना से भर दिया। उन्होंने अँग्रेजों द्वारा लागू जमींदारी प्रथा, धर्मांतरण और जनजातियों के पारम्परिक जीवन पर हो रहे अत्याचारों के विरूद्ध संघर्ष किया।

उलगुलान आंदोलन का नेतृत्व – बिरसा मुंडा जी ने 'उलगुलान' नामक जनजातीय विद्रोह का नेतृत्व किया, जो अँग्रेजी शासन और उनके द्वारा किए जा रहे अत्याचार के खिलाफ था। 'उलगुलान' का अर्थ है 'महान विद्रोह'। इस आंदोलन का उद्देश्य अँग्रेजों द्वारा लागू की गई भूमि नीतियों, जबरन धर्मांतरण और जनजातियों की पारम्परिक जीवनशैली में दखल देने वाले कानूनों के खिलाफ आवाज उठाना था। भगवान बिरसा मुंडा के नेतृत्व में इस आंदोलन ने पूरे क्षेत्र में जनक्रांति की लहर पैदा कर दी और उन्हें 'धरती आबा' या 'धरती पिता' के रूप में सम्मानित किया जाने लगा।

भगवान बिरसा मुंडा का समाज सुधारक के रूप में योगदान – भगवान बिरसा मुंडा केवल एक स्वतंत्रता सेनानी ही नहीं, बल्कि एक महान समाज सुधारक भी थे। उन्होंने तत्कालीन जनजातीय समाज में व्याप्त कुरीतियों जैसे अंध–विश्वास, जाति–भेद, नशाखोरी, जातीय संघर्ष और अन्य सामाजिक बुराइयों के खिलाफ जागरूकता फैलाई। उन्होंने अपने अनुयायियों को शिक्षा का महत्व समझाया और उन्हें एकता में रहने का संदेश दिया। बिरसा मुंडा ने 'बिरसाइत' नामक एक धार्मिक आंदोलन भी चलाया, जिसमें, उन्होंने अपने अनुयायियों को आचार–विचार की शुचिता, सादगी और सत्य के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया।

राष्ट्रीय जनजातीय गौरव दिवस की स्थापना – वर्ष 2021 में केन्द्र सरकार ने भगवान बिरसा मुंडा की जयंती 15 नवंबर को राष्ट्रीय जनजातीय गौरव दिवस के रूप में घोषित किया। इसका उद्देश्य भगवान बिरसा मुंडा और अन्य जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान का सम्मान करना है। इस दिन देशभर में जनजातीय समाज की साँस्कृतिक धरोहर, उनकी परंपराओं और उनके गौरवशाली इतिहास को समझने और सम्मानित करने के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। यह दिवस जनजातीय समाज के

संघर्षों और उनके योगदान को याद करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है।

बिरसा मुंडा का भारतीय स्वातंत्र्य आंदोलन में योगदान – भारतीय स्वातंत्र्य आंदोलन में भगवान बिरसा मुंडा का योगदान अतुलनीय है। वे न केवल अपने क्षेत्र की जनजातियों के नेता थे, बल्कि उनके संघर्ष और बलिदान ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को भी एक नई दिशा दी। उनके 'उलगुलान' आंदोलन ने अन्य जनजातीय समुदायों को भी संगठित किया और स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भागीदारी करने की प्रेरणा दी।

भगवान बिरसा मुंडा मात्र 24 साल 7 महीने की अल्पायु में 9 जून 1900 को वीरगति को प्राप्त हुए। उनकी विरासत आज भी जनजातीय समाज के दिलों में जीवित है और उन्हें एक महान क्रांतिकारी जननायक के रूप में याद किया जाता है।

राष्ट्रीय जनजातीय गौरव दिवस का महत्व – राष्ट्रीय जनजातीय गौरव दिवस का महत्व केवल बिरसा मुंडा जी के योगदान को याद करने तक सीमित नहीं है। यह जनजातीय समाज की साँस्कृतिक और ऐतिहासिक पहचान का उत्सव मनाने का भी दिन है। जनजातीय समाज ने भारत के इतिहास में अहम भूमिका निभाई है। यह गौरव दिवस उनकी साँस्कृतिक धरोहर, संघर्षों और उपलब्धियों का सम्मान करता है। यह अवसर सभी भारतीयों को यह स्मरण दिलाने का भी है कि जनजातीय समाज भारत की सँस्कृति का एक महत्वपूर्ण व अभिन्न हिस्सा है और उनके योगदान को हमें सदैव संजोकर रखना चाहिए।

भगवान बिरसा मुंडा का जीवन प्रेरणा का स्रोत है, जो हमें साहस, संघर्ष और सामाजिक न्याय के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का संदेश देता है। राष्ट्रीय जनजातीय गौरव दिवस हमें उनकी शिक्षाओं, राष्ट्रप्रेम और उनके संघर्ष को याद करने और जनजातीय समाज के अधिकारों और सम्मान के प्रति संवेदनशील बने रहने के लिए प्रेरित करता है। जनजातीय समाज के स्वाभिमान और उनके अधिकारों की रक्षा में भगवान बिरसा मुंडा का योगदान सदैव अविस्मरणीय रहेगा। राष्ट्रीय जनजातीय गौरव दिवस उनके प्रति हमारी कृतज्ञता, आदर और श्रद्धांजलि का प्रतीक है।

– लेखक मध्यप्रदेश के
जनजातीय कार्य मंत्री हैं
ramkumarsingh3@gmail.com

मंदिरों की मुक्ति, वक्फ संशोधन व संविधान के अनुच्छेद २९ व ३० के संदर्भ में हुई चर्चा

नई दिल्ली, 19 दिसंबर, 2024। विश्व हिंदू परिषद ने संसद के शीतकालीन सत्र की अवधि में चलाए अपने सांसद संपर्क अभियान में अभी तक 350 से अधिक सांसदों से संपर्क कर हिंदू समाज से जुड़े तीन विभिन्न विषयों पर चर्चा की है। विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय महामंत्री श्री बजरंग लाल बागड़ा ने आज बताया कि देश भर से आए विभिन्न प्रांतों, भाषाओं और मत–पंथों से जुड़े कार्यकर्ताओं ने इस अभियान के दौरान मंदिरों की सरकारी नियंत्रण से मुक्ति, वक्फ संशोधन विधेयक व संविधान के अनुच्छेद 29 व 30 के अंतर्गत अल्पसंख्यकों को प्राप्त विशेषाधिकार हिंदू समाज को भी दिए जाने के संदर्भ में चर्चा की।

उन्होंने बताया कि विश्व हिन्दू परिषद द्वारा प्रतिवर्ष संसद के शीतकालीन सत्र में देश भर के सभी दलों के सांसदों से संपर्क का कार्यक्रम होता है। इसके माध्यम से विहिप के बहुआयामी कार्य व कार्यक्रमों के साथ हिन्दू समाज और देश की एकता अखंडता से जुड़े किन्हीं दो या तीन ज्वलंत मुद्दों पर जानकारी दी जाती है। इस कार्य के लिए पूरे देश के विभिन्न प्रांतों से कार्यकर्ता 3–4 चरणों में दिल्ली पहुंचकर अपने–अपने प्रान्त के सांसदों से संपर्क करते हैं।

वर्तमान शीतकालीन सत्र में यह कार्यक्रम 2 से 20 दिसम्बर तक आयोजित था। इसके प्रथम चरण में 2 से 6 दिसम्बर तक केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल और महाराष्ट्र के कार्यकर्ताओं ने कुल 114 लोकसभा और राज्य सभा सांसदों से संपर्क किया।

9 से 13 दिसम्बर तक चले द्वितीय चरण में छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, पंजाब और जम्मू कश्मीर के कार्यकर्ताओं ने इन प्रांतों के कुल 139 सांसदों से संपर्क किया। अभियान का तृतीय और अंतिम चरण 16 से 20 दिसम्बर तक था। इसमें उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, झारखण्ड, असम, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश, त्रिपुरा, मणिपुर व नागालैंड के कार्यकर्ता यहाँ के माननीय सांसदों से संपर्क में जुटे। उन्होंने बताया कि अभी तक हम 350 से अधिक माननीय सांसदों से संपर्क कर चुके हैं। यह कार्यक्रम कल शुक्रवार 20 दिसम्बर को पूर्ण हो जाएगा। विहिप महामंत्री ने बताया कि इस वर्ष हमने 3 विषय इस संपर्क अभियान के लिए तय किए–

1. सभी हिन्दू मंदिर जो सरकारों के नियंत्रण में हैं, उन्हें हिन्दू समाज को सौंप दिया जाय।
2. वक्फ कानून में संशोधन कर उसे युक्ति संगत बनाया जाए। हम सरकार द्वारा प्रस्तावित संशोधनों का समर्थन करने का आग्रह करते हैं।
3. संविधान के अनुच्छेद 29 और 30, जो कि अल्पसंख्यक समुदाय को अपने धार्मिक शिक्षण संस्थान संचालन करने की अनुमति देते हैं, वैसी ही सुविधा हिन्दू समाज को भी दी जाय, क्योंकि मात्र हिन्दू ही इस अधिकार से वंचित हैं।

उन्होंने यह भी बताया कि इस कार्यक्रम में हमने सभी दलों के माननीय सांसदों से मिलने का समय मांगा था। हमें प्रसन्नता है कि अधिकांश ने हमारे अनुरोध को स्वीकार किया तथा उनसे बहुत ही सार्थक और उपयोगी चर्चा हुई। दिल्ली में हुई इस प्रेस वार्ता में विहिप के केंद्रीय मंत्री, विशेष संपर्क प्रमुख व राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री अम्बरीष भी उपस्थित थे।

vinodbansal01@gmail.com

धनिया का आध्यात्मिक और साँस्कृतिक महत्व

डॉ. आनंद मोहन
सहयोगी - डॉ. अग्रताबेन वघेल, सबरीन बशीर, आलोक मोहन

धनिया एक सामान्य पाक सामग्री होने के साथ हिंदू धर्म में आध्यात्मिक और साँस्कृतिक महत्व का प्रतीक है। भारतीय परंपराओं में गहरा धार्मिक, औषधीय और अनुष्ठानिक महत्व रखती है। प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रंथों में इसकी उपस्थिति से लेकर त्योहारों और प्रसाद में इसकी भूमिका तक, धनिया स्वास्थ्य, समृद्धि और देवत्व का प्रतिनिधित्व करता है। दिवाली के शुभ पाँच दिवसीय त्योहार के दौरान मनाया जाने वाला धनतेरस, धन, स्वास्थ्य और समृद्धि से जुड़े समय की शुरुआत का प्रतीक है। इस दिन धनिया के बीज को सौभाग्य का अग्रदूत माना जाता है। भक्त धनिया के बीज को एक अनुष्ठानिक अभ्यास के रूप में खरीदते हैं, यह मानते हुए कि वे बहुतायत का आशीर्वाद लाते हैं। पूजा समारोहों में देवताओं को धनिया के बीज चढ़ाए जाते हैं, जो समृद्धि और कृतज्ञता का प्रतीक है। कुछ परिवार धनिया के बीज को मिट्टी में गाड़ देते हैं, जो धन और समृद्धि के विकास का प्रतीक है, जबकि अन्य लाल कपड़े में बीज बांधते हैं और उन्हें पवित्र स्थानों या धन के बक्से में रखते हैं, जो सुरक्षा और वित्तीय स्थिरता का प्रतीक है।

कृष्ण जन्माष्टमी पर धनिया एक पारंपरिक व्यंजन के रूप में एक विशेष भूमिका निभाता है, जिसे धनिया पंजीरी के नाम से जाना जाता है। धनिया पाउडर, घी, चीनी और सूखे मेवे से बनाया गया यह नैवेद्य न केवल एक स्वादिष्ट व्यंजन है, बल्कि भगवान कृष्ण को चढ़ाए जाने वाले पवित्र प्रसाद का एक अभिन्न अंग भी है। पकवान को शुद्ध और सात्विक माना जाता है, जो इसे देवताओं को चढ़ाने के लिए आदर्श बनाता है। माना जाता है कि धनिया सहित इसके तत्व पाचन को बढ़ाते हैं और शारीरिक और आध्यात्मिक कल्याण को बढ़ावा देते हैं। यह प्रसाद भगवान कृष्ण के प्रति भक्ति और श्रद्धा का प्रतीक है, जो हिंदू सँस्कृति में भोजन और आध्यात्मिकता के बीच गहरे संबंध को दर्शाती है।

आयुर्वेद की प्राचीन औषधीय प्रणाली में धनिया को कुस्तुमवारी कहा जाता है, जो अपने चिकित्सीय गुणों के लिए मनाई जाने वाली एक श्रद्धेय जड़ी बूटी है। इसे एक त्रिदोष शामक जड़ी बूटी के रूप में वर्गीकृत किया गया है, जो तीनों दोषों (वात, पित्त और कफ) को संतुलित करने में सक्षम है। धनिया के बीज और पत्तियाँ पाचन को उत्तेजित करने, सूजन को कम करने और पेट की बीमारियों को कम करने के लिए जाने जाते हैं। इसका कड़वा स्वाद शरीर को शुद्ध करने और नकारात्मक ऊर्जा को मुक्त करने के लिए उपयोग होता है, जबकि इसका शीतलन प्रभाव इसे पित्त दोष को शांत करने के लिए आदर्श बनाता है। आयुर्वेदिक में, धनिया शरीर और मन को शुद्ध करता है, एक सामंजस्यपूर्ण संतुलन को बढ़ावा देता है।

धनिया हिंदू अनुष्ठानों और मान्यताओं में एक प्रतीकात्मक स्थान रखता है, जो शुद्धता, समृद्धि और स्वास्थ्य के गुणों का प्रतीक है। भूख बढ़ाने वाले के रूप में, धनिया परमात्मा द्वारा प्रदान किए गए पोषण और जीविका का प्रतीक है। इसकी सूक्ष्म सुगंध को शुभ माना जाता है, जिसका उपयोग अक्सर धूप और पवित्र प्रसाद में किया जाता है। खाना पकाने में इसकी बहुमुखी प्रतिभा एकता और सद्भाव को दर्शाती है, इसका महत्व हिंदू दर्शन में गहराई से निहित हैं। धनिया विभिन्न हिंदू त्योहारों, अनुष्ठानों और समारोहों में एक आवश्यक तत्व है। नवरात्रि के

दौरान, धनिया के बीज का उपयोग प्रायः हवन (अग्नि अनुष्ठान) में देवी दुर्गा को प्रसाद के रूप में किया जाता है। पोंगल और मकर संक्रांति जैसे फसल त्योहारों में, धनिया का उपयोग पारंपरिक व्यंजनों और अनुष्ठानों में प्रकृति को भरपूर फसल के लिए धन्यवाद देने के लिए किया जाता है। इसके अतिरिक्त, धनिया के बीज कभी–कभी शादी की रस्मों में शामिल होते हैं, जो प्रजनन क्षमता और समृद्धि का प्रतीक होते हैं।

धनिया भारतीय सँस्कृति में पवित्रता और आवश्यकताओं के बीच की खाई को पाटता है। जबकि इसका आध्यात्मिक महत्व गहरा है, इसका पाक महत्व भी उतना ही उल्लेखनीय है। ताजा धनिया पत्ती का उपयोग करी, चटनी और सलाद को गार्निश करने के लिए किया जाता है, जो एक ताजा, सुगंधित स्वाद जोड़ता है। सूखे धनिया के बीज खाने के मसाले में महत्वपूर्ण अंग होते हैं, यह अंचार और मसालों में पूरे उपयोग किए जाते हैं, जबकि डंठल अक्सर सूप इत्यादि में उनके स्वाद के लिए जोड़े जाते हैं। हिंदू पौराणिक कथाओं में धनिया की उपस्थिति महत्व की एक और परत जोड़ती है।

धनिया पत्ती और बीज अत्यधिक पौष्टिक होते हैं, जो कैल्शियम, फास्फोरस और आयरन जैसे खनिजों के साथ विटामिन ए, सी, बी 2 और आहार फाइबर प्रदान करते हैं। ये पोषक तत्व समग्र स्वास्थ्य में योगदान करते हैं, जिसमें बेहतर दृष्टि, प्रतिरक्षा समर्थन और मजबूत हड्डियाँ शामिल हैं। फैटी एसिड और आवश्यक तेलों से भरपूर बीज, विशेष रूप से उनके स्वाद और स्वास्थ्य बढ़ाने वाले गुणों के लिए मूल्यवान हैं। धनिया एक प्राकृतिक एंटीऑक्सीडेंट स्रोत है, इसकी पत्तियों और बीजों में लिनालूल, कैफिक एसिड और फेनोलिक एसिड जैसे यौगिक होते हैं। ये एंटीऑक्सिडेंट मुक्त कणों को बेअसर करने, ऑक्सीडेटिव तनाव को कम करने और सेलुलर क्षति के खिलाफ शरीर की रक्षा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अध्ययनों से पता चला है कि धनिया का अर्क लिपिड पेरोक्सीडेशन को रोक सकता है और उम्र से संबंधित बीमारियों जैसे कैंसर और हृदय रोग की शुरुआत में देरी कर सकता है। धनिया में आवश्यक तेल, जिसमें लिनालूल और अन्य मोनोटरपेन शामिल हैं, मजबूत सूजनरोधी और रोगाणुरोधी गुणों को प्रदर्शित करता है। ये गुण धनिया को संक्रमण और सूजन की स्थिति के खिलाफ प्रभावी बनाते हैं। उदाहरण के लिए धनिया तेल को कुछ रोगजनक बैक्टीरिया और कवक के विकास को रोकने के लिए दिखाया गया है, जिससे यह एक प्राकृतिक संरक्षक और संभावित चिकित्सीय एजेंट के रूप में उपयोगी हो जाता है। धनिया के बीज में एक महत्वपूर्ण हाइपोलिपिडेमिक प्रभाव होता है, जो कोलेस्ट्रॉल के स्तर को प्रबंधित करने में मदद करता है।

धनिया को इसके एंटी–डायबिटिक गुणों के लिए पहचाना गया है। मधुमेह पशु मॉडल में अध्ययन से पता चला है कि धनिया के बीज रक्त शर्करा के स्तर को कम कर सकते हैं और इंसुलिन संवेदनशीलता में सुधार कर सकते हैं। इस प्रभाव को धनिया में बायोएक्टिव यौगिकों के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, जो ग्लूकोज चयापचय को बढ़ाते हैं, जिससे यह मधुमेह के प्रबंधन के लिए एक आशाजनक प्राकृतिक उपचार बन जाता है। परंपरागत रूप से धनिया का उपयोग कार्मिनेटिव के रूप में किया जाता है, जो सूजन, गैस और अपच जैसे पाचन मुद्दों को कम करने में मदद करता है। इसके आवश्यक तेल में पेट और स्पस्मोलाइटिक एजेंट होते हैं, जो पेट में ऐंठन से राहत देकर और गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल गतिशीलता में सुधार करके स्वस्थ पाचन को बढ़ावा देते हैं। इसके अलावा धनिया के रोगाणुरोधी प्रभाव एक स्वस्थ आंत माइक्रोबायोम को बनाए रखने में मदद कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त धनिया पित्त स्राव को बढ़ावा देकर और एंजाइमों को डिटॉक्सीफाई करने की गतिविधि को बढ़ाकर यकृत स्वास्थ्य और विषहरण का समर्थन करता है। हिंदू सँस्कृति में धनिया न केवल एक पाक घटक के रूप में अपनी भूमिका को पार करता है। अनुष्ठानों, त्योहारों और आयुर्वेदिक प्रथाओं में इसकी उपस्थिति इसके आध्यात्मिक और औषधीय महत्व को रेखांकित करती है। धनिया की समृद्ध विरासत को गले लगाने से न केवल हिंदू अनुष्ठानों की समझ गहरी होती है, बल्कि भारतीय सँस्कृति में प्रकृति के उपहारों के उपयोग में निहित गहन ज्ञान पर भी प्रकाश डालता है।

धर्म रक्षा निधि समर्पण ०१ से १५ दिसंबर, ११ दिसंबर गीता जयंती शौर्य दिवस : विहिप'

राँची, 01 दिसम्बर 2024। विश्व हिंदू परिषद झारखण्ड प्रांत कार्यकारिणी की एक दिवसीय बैठक पूर्वाह्न 10.00 से 5.00 बजे तक दो सत्रों में स्टेशन रोड स्थित होटल ग्रीन होराइजन में की गई। बैठक की अध्यक्षता करते हुए विहिप प्रांत अध्यक्ष चंद्रकांत रायपत जी ने सभी कार्यकर्ताओं को समाज में समन्वय बना कर कार्य करने का निवेदन किया।

बैठक में विगत माहों में संपन्न हुए कार्यक्रमों में हुतात्मा दिवस और सँस्कार सप्ताह की समीक्षा की गई, साथ ही आगामी कार्यक्रमों की योजना बनाई गई। 1 से 15 दिसंबर तक धर्म रक्षा निधि संग्रह अभियान चलाने का निर्णय लिया गया। गीता जंयती के अवसर पर 11 दिसम्बर और 15 दिसम्बर को गीता जयंती के अवसर पर शौर्य दिवस का आयोजन प्रखंड स्तर पर किया जाएगा। 15 जनवरी 2025 त्रिशूल दीक्षा कार्यक्रम विभाग स्तर पर करने का निर्णय लिया गया। आगामी जनवरी माह में प्रयागराज महाकुंभ में आयोजित केंद्रीय बैठकों की जानकारी कार्यकर्ताओं को दी गई।

मसूड़ों का सूजन और दर्द को कम करने के घरेलू उपयोग

मसूड़ों की ऐंठन, धूम्रपान, दांतों के बीच अधिक जगह, दांत और मसूड़े, एलर्जी आदि इसके कई कारण हैं। इसके अलावा बहुत अधिक धूम्रपान करने से मसूड़ों की समस्या हो सकती है। तो आप कुछ घरेलू उपचार का उपयोग कर सकते हैं और मसूड़ों की सूजन को कम कर सकते हैं।

लौंग और लौंग का तेल....

लौंग के तेल में क्रिनोलिन होता है, जो एक एंटीऑक्सीडेंट है, इसलिए लौंग का तेल मसूड़ों के दर्द और सूजन को कम करने में मदद करता है।

कैसे इस्तेमाल करें...

लौंग के तेल में 2—3 छोटे काली मिर्च पाउडर मिलाएँ और मसूड़ों पर लगाएँ। इस उपाय को आप दिन में 2—3 बार कर सकते हैं।

हल्दी.....

हल्दी में करक्यूमिन होता है, जो एक एंटीऑक्सीडेंट है और इसमें एंटी—इंफ्लेमेटरी गुण भी होते हैं। इसीलिए यह मसूड़ों की सूजन को कम करता है।

कैसे इस्तेमाल करें...

एक चौथाई चम्मच हल्दी पाउडर मिलाएँ और इसे मसूड़ों पर लगाएँ और 5 मिनट बाद इसे रगड़ें। इसे दिन में दो बार करें।

खारा पानी....

दांतों और मुँह की समस्याओं के लिए नमक सबसे प्रभावी उपाय है। नमक रोगाणुओं को समाप्त करता है और सूजन को कम करता है, इसलिए यह मसूड़ों की सूजन को दूर करने के लिए उपयोगी है।

कैसे इस्तेमाल करें....

आधा गिलास गर्म पानी में आधा चम्मच नमक डालें और इस पानी से दांतों को कुल्ला करें। आप इसे दिन में 2—3 बार कर सकते हैं।

बेकिंग सोडा....

बेकिंग सोडा में प्राकृतिक रूप से बैक्टीरिया को खत्म करने की शक्ति होती है। यह मुँह में बैक्टीरिया के प्रभाव को खत्म करता है।

कैसे इस्तेमाल करें....

बेकिंग सोडा को मसूड़ों पर पेस्ट की तरह लगाएँ। बेकिंग सोडा में हल्दी मिलाकर पेस्ट की तरह मसूड़ों पर इस्तेमाल कर सकते हैं।

नींबू.....

नींबू के रस में पर्याप्त मात्रा में पोटेशियम, विटामिन सी, विटामिन ए, पोटेशियम, कैल्शियम, साथ ही साथ विरोधी भड़काऊ और एंटी—बैक्टीरियल गुण होते हैं। नींबू मसूड़ों की सूजन को कम करने के लिए उपयोगी है।

कैसे इस्तेमाल करें...

गर्म पानी में एक नींबू निचोड़ें और इससे कुल्ला करें। आप इसे दिन में 2—3 बार भी कर सकते हैं।

आयुर्वेद अपनाएँ स्वस्थ जीवन पाएँ...

अगर आप भी दांतों या मसूड़ों की किसी भी तरह की प्रॉब्लम से परेशान हैं, तो हमने अपने पूर्वजों द्वारा दिए गए ज्ञान से एक आयुर्वेदिक दंत मंजन और पेस्ट तैयार किया है, जिसके उपयोग से आपके दांतों की सभी परेशानी दूर हो जाती है, इसे आप अपने बच्चों तथा बड़े सभी के लिए इस्तेमाल कर सकते है।.... और केमिकल युक्त उत्पाद से भी अपने और अपने परिवार को बचा सकते हैं।

murari.shukla@gmail.com

बाँग्लादेश में चिन्मय कृष्ण दास की अबिलंब रिहाई व हिंदुओं के लगातार उत्पीड़न रोकने हेतु आगे आए विश्व समुदाय : विहिप महामंत्री

पटना, 30 नवंबर, 2024। विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय महामंत्री श्री बजरंग लाल बागड़ा ने बाँग्लादेश प्रशासन द्वारा वहाँ के हिंदू नेता और इस्कॉन मंदिर के पुजारी की गिरफ्तारी पर चिंता और आक्रोश व्यक्त करते हुए, उसे वहाँ के प्रशासन की कायरतापूर्ण और अलोकतांत्रिक घटना बताया है। उन्होंने कहा कि विश्व हिंदू परिषद प्रशासन की इस कायरतापूर्ण और अलोकतांत्रिक घटना का पुरजोर विरोध करती है। इस्कॉन ने या हिंदू समाज के अन्य संगठनों ने अभी तक अपने उत्पीड़न के विरोध में जितनी भी कार्यवाहियाँ की हैं, वह सब लोकतांत्रिक तरीके से की हैं। किसी भी प्रकार की हिंसा का उन्होंने प्रतिहिंसा के रूप में अभी तक कोई उत्तर नहीं दिया है। इस प्रकार के पूर्ण शांतिप्रिय और लोकतांत्रिक रूप से अपनी बात रखने वाले समाज के किसी नेतृत्व को इस प्रकार से अलोकतांत्रिक तरीके से गिरफ्तार करना एवं उनकी आवाज को दबाने की कुचेष्टा करना अलोकतांत्रिक, अमानवीय और हिंदू समाज के मानवाधिकारों का हनन है!

श्री बागड़ा ने कहा कि हम प्रारंभ से ही मांग कर रहे हैं कि बाँग्लादेश में जो घटनाक्रम चल रहा है, उसमें वामपंथी कट्टर इस्लामिक तत्वों के साथ मिलकर वहाँ के हिंदू समाज का दमन कर रहे हैं। दुर्भाग्य की बात है कि पूरे विश्व समुदाय और वैश्विक संगठनों को इस बर्बरता का जितना विरोध करना चाहिए था, नहीं किया। जैसी रोक लगानी चाहिए थी, ऐसी रोक नहीं लगाई है। विश्व हिंदू परिषद पूरे विश्व समुदाय से यह अपेक्षा करती है कि वहाँ पर हो रहे नृशन्स घटनाक्रम को ध्यान से देखें, उसकी गंभीरता को समझें और बाँग्लादेश के प्रशासन पर दबाव बनाएँ कि हिंदुओं के और अन्य अल्पसँख्यकों के मानवाधिकारों की रक्षा और सुरक्षा की जाए।

विहिप महामंत्री ने यह भी कहा कि भारत सरकार का प्रति–उत्तर इस विषय में बहुत ही सावधानीपूर्वक और न्यूनतम रहा है। एक संप्रभु देश की स्वायत्तता को किसी भी प्रकार से चुनौती देना, दूसरे देश की सरकार के लिए उचित नहीं है, परंतु एक बड़े हिंदू समुदाय का इस प्रकार का उत्पीड़न पूरा विश्व, सारे पड़ोसी देश, भारत सरकार सिर्फ देखते रहें और कुछ भी कार्यवाही नहीं करें, यह भी एक सीमा तक तो स्वीकार्य है, लेकिन लंबे समय तक यह भी स्वीकार नहीं किया जा सकता। विभाजन और उसके पश्चात् के नेहरू, लियाकत समझौते के परिदृश्य में बाँग्लादेश प्रशासन का विशेष कर्तव्य है कि वहाँ अल्पसँख्यकों को सुरक्षा दी जाए।

विश्व हिंदू परिषद का मानना है कि विश्व समुदाय इन सब घटनाओं को संज्ञान में लेकर बाँग्लादेश के प्रशासन पर दबाव बनाए कि हिंदुओं के उत्पीड़न को रोकें। हम तुरंत प्रभाव से श्री चिन्मय कृष्ण दास प्रभु जी की रिहाई की मांग करते हैं और किसी भी हिंदू नेता, हिंदू पुजारी, धार्मिक गुरु को बिना पर्याप्त कारण के गिरफ्तार करने की किसी भी प्रकार की मानसिकता से बाँग्लादेश सरकार बचे, यह अपेक्षा भी करते हैं।

दक्षिण बिहार विहिप-विधि प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित विचार गोष्ठी

पटना। आज गाँधी संग्रहालय में विश्व हिंदू परिषद विधि प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित विचार गोष्ठी से पूर्व प्रेस वार्ता का आयोजन किया गया। प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए विश्व हिंदू परिषद विधि प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय सह–संयोजक श्री अभिषेक अत्रे ने कहा कि वक्फ संशोधन विधेयक 2024 का हम स्वागत करते हैं और अपेक्षा करते हैं कि इसे शीघ्र लागू किया जाएगा। उन्होंने बताया कि विश्व हिंदू परिषद का विधि प्रकोष्ठ इस विषय पर वर्षों से काम कर रहा है।

श्री अत्रे ने वक्फ अधिनियम 1995 का उल्लेख करते हुए कहा कि इसमें कई त्रुटियाँ हैं। इस अधिनियम के तहत किसी भी व्यक्ति को नोटिस देकर उसकी संपत्ति वक्फ की घोषित की जा सकती है, यानी किसी की भी संपत्ति छीनी जा सकती है। इस प्रावधान से न केवल गैर–मुस्लिम बल्कि कई मुस्लिम समुदाय के लोग भी पीड़ित हैं। इतना ही नहीं इस कानून के अंतर्गत न्याय के लिए आप सामान्य अदालत में भी नहीं जा सकते, मामले की सुनवाई केवल वक्फ ट्रिब्यूनल में ही होती है।

उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि त्रिची में 1500 साल पुरानी संपत्ति को वक्फ घोषित कर दिया गया। इसी प्रकार बिहार के फतुहा में भी ऐसा मामला सामने आया है, जो पूरे समाज में चर्चा का विषय बन गया है। वक्फ अधिनियम की धारा 40 के अनुसार यदि वक्फ बोर्ड किसी संपत्ति पर दावा करता है, तो उस संपत्ति का मालिकाना हक सिद्ध करने की जिम्मेदारी असली मालिक पर आ जाती है। इससे वक्फ बोर्ड द्वारा दावा की गई संपत्ति स्वतः उनकी हो जाती है।

दिल्ली हाईकोर्ट में इस साल अप्रैल में एक याचिका दायर की गई थी, जिसमें वक्फ अधिनियम के प्रावधानों को चुनौती दी गई थी। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि ऐसे प्रावधान किसी भी मुस्लिम देश में भी लागू नहीं हैं। इसलिए वक्फ संशोधन विधेयक 2024 को शीघ्र लागू करना आवश्यक है, ताकि कब्जा की गई संपत्ति को सुरक्षित किया जा सके और पीड़ित व्यक्ति अन्य अदालतों में न्याय की गुहार लगा सके।

chitranjan1964@gmail.com

रोटोरुआ का पहला भजन और कीर्तन सम्मेलन भक्ति का उत्सव और एकता

हिंदू एल्डर्स फाउंडेशन रोटोरुआ द्वारा आयोजित भजन और कीर्तन सम्मेलन के उद्घाटन के साथ रोटोरुआ समुदाय ने एक आध्यात्मिक और साँस्कृतिक मील का पत्थर सिद्ध होने वाला कार्यक्रम आयोजित किया। हिंदू हेरिटेज सेंटर, शुक्रवार, 6 दिसंबर 2024, शाम 6.00 से 8.00 बजे तक कार्यक्रम पारंपरिक भक्ति संगीत की एक खूबसूरत शाम का प्रदर्शन किया तथा जिससे गहरे सामुदायिक संबंध के अवसर पैदा हुए।

इस भावपूर्ण सभा ने साँस्कृतिक सीमाओं को पार करते हुए एक सामंजस्यपूर्ण मिश्रण प्रस्तुत किया। भजन (भक्ति गीत) और कीर्तन (पवित्र मंत्र) प्रतिभाशाली स्थानीय कलाकारों द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में एकता को बढ़ावा देते हुए भारत की समृद्ध आध्यात्मिक और साँस्कृतिक विरासत का उत्सव मनाया गया। न्यूजीलेंड की हिंदू परिषद के अध्यक्ष डॉ. गुना मैगेसन ने कलाकारों और उनकी प्रशंसा करते हुए कहा कि "हम प्रतिभा की प्रचुरता को देखकर चकित और प्रसन्न थे। कलाकारों के भावपूर्ण गायन ने सभी को उत्साहित और प्रेरित करते हुए गहन आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया।" उन्होंने दर्शकों का आभार भी व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि "कोरस में शामिल होने की उनकी इच्छा ने साँझा करने की भावना पैदा की। खुशी और भक्ति, इस आयोजन को एक शानदार सफलता बना रही है।

हिंदू एल्डर्स फाउंडेशन रोटोरुआ के अध्यक्ष श्री विजय चंद ने सभा का स्वागत किया और कलाकारों को उनके योगदान के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने इस आयोजन के लिए अपना दृष्टिकोण सांझा करते हुए कहा कि "यह सम्मेलन एक संगीतमय शाम से कहीं अधिक है। यह भक्ति, आध्यात्मिकता का उत्सव है। यह हमें एक बड़े परिवार के रूप में एक साथ लाता है, संगीत के पवित्र धागों से जुड़ा हुआ है।

इस कार्यक्रम ने रोटोरुआ से परे, ऑकलैंड, टौरंगा और अन्य देशों के कलाकारों का ध्यान आकर्षित किया। "हम इसे वार्षिक कार्यक्रम बनाने की कल्पना करते हैं। श्री चंद ने आयोजन पर जोर देते हुए कहा कि उसमें सामुदायिक संबंधों को बढ़ावा देने और प्रतिभा को पोषित करने की क्षमता है।

कलाकारों को तीन आयु समूहों में वर्गीकृत किया गया–छात्र (6–17 वर्ष), युवा (18–35 वर्ष) और वरिष्ठ नागरिकों (36 वर्ष) ने विविध प्रकार की संगीत प्रतिभा का प्रदर्शन किया। जेनिका सिया कुमार, सुश्री विद्या वासुदेवन और सुश्री संध्या पवन को उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया। कलाकारों द्वारा अपनी–अपनी श्रेणियों में प्रदर्शन किया गया। समग्र पुरस्कार राजनील देव को मिला।

रोटोरुआ सत्संग बॉयज ने अपनी भक्तिपूर्ण प्रस्तुतियों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। उदाहरण के लिए यह आयोजन धार्मिक या साँस्कृतिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना सभी के लिए खुला था। "हिंदू एल्डर्स फाउंडेशन न केवल वरिष्ठों का प्रतिनिधित्व करता है, अपितु समावेशिता और सामुदायिक भावना का सम्मान भी करता है।

श्री चंद ने कहा कि फाउंडेशन के कार्यक्रमों का लक्ष्य बागवानी पहल, यात्राओं के माध्यम से समुदाय को शामिल करना है। स्थानीय आकर्षण, सरकारी एजेंसियों और गैर सरकारी संगठनों के साथ सहयोग, यह सुनिश्चित करना कि हिंदू बुजुर्ग समाज में सक्रिय और मूल्यवान योगदानकर्ता बने रहते हैं। संगीत, भक्ति और एकता के मिश्रण के साथ पहला भजन और कीर्तन सम्मेलन शुरू हो गया है।

hindu.nz@gmail.com

विश्व हिन्दू परिषद के प्रांतीय मार्गदर्शक मंडल की बैठक

हरिद्वार। विश्व हिन्दू परिषद उत्तराखण्ड के तत्वावधान में प्रांतीय मार्गदर्शक मण्डल की बैठक स्वामी नारायण मंदिर भूपतवाला में आयोजित की गई। संत सम्मेलन की अध्यक्षता बाबा हठयोगी महाराज ने की, जिसमें चंपत राय महामंत्री श्री राम मंदिर तीर्थक्षेत्र अयोध्या तथा अंतरराष्ट्रीय उपाध्यक्ष विश्व हिन्दू परिषद संत सम्मेलन की प्रस्तावना को संतों के समक्ष प्रस्तुत किया।

विश्व हिन्दू परिषद प्रांतीय मार्गदर्शक मंडल की प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए चंपत राय जी ने कहा कि भारतीय समाज के पाश्चात्य सँस्कृति को आत्मसात करने से हमारी पारंपरिक मूल्यों, रीति–रिवाजों और साँस्कृतिक विरासत को खतरा हो रहा है। भारतीय सँस्कृति की विशेषता इसकी विविधता, सहिष्णुता और समृद्धि है। हमारी सँस्कृति में विभिन्न मत, पंथ, संप्रदाय एवं सँस्कृतियों के लोगों के बीच सामंजस्य और एकता की भावना है। हमें अपनी सँस्कृति और परंपराओं के प्रति गर्व और सम्मान की भावना को बढ़ावा देना होगा। हमें युवाओं को सँस्कृति और परंपराओं के विषय में शिक्षित करना होगा, ताकि वह अपनी सँस्कृति को समझें और उसका सम्मान करें। भारत में संतों का विशेष प्रभाव ऐतिहासिक और साँस्कृतिक वास्तविकता है। संतों की वाणी और उनके द्वारा दिए गए संदेशों पर लोगों का विश्वास और समर्थन होना बेहद महत्वपूर्ण पहलू है। विश्व हिन्दू परिषद भी समाज में महत्वपूर्ण योगदान करता है, किंतु संत हिन्दू समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने में बेहद महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

महामंडलेश्वर दयाराम दास महाराज ने कहा कि उत्तराखण्ड के पहाड़ी क्षेत्रों में जनसँख्या असंतुलन और भौगोलिक परिवर्तन एक गंभीर समस्या है। यह समस्या न केवल स्थानीय पारिस्थितिकी और भूगोल को प्रभावित कर रही है, बल्कि यह भारतीय सीमाओं की सुरक्षा को भी खतरे में डाल रही है। लव जिहाद, लैंड जिहाद और मजार जिहाद जैसी गतिविधियों के कारण क्षेत्र में असुरक्षा की भावना बढ़ रही है। पहाड़ी क्षेत्रों में पलायन बढ़ रहा है, जिससे स्थानीय सँस्कृति और परंपराओं पर भी खतरा मंडरा रहा है। साध्वी राधा गिरी ने कहा कि पुण्य पवित्र माँ गंगा के किनारों पर नशे का व्यापार बढ़ता जा रहा है। संतों के वेश में मुसलमानों द्वारा अपराध करने से समाज का संतों पर विश्वास भी कम हो रहा है। यह समस्या न केवल धार्मिक और सामाजिक है, बल्कि यह एक गंभीर अपराधिक समस्या भी है।

विश्व हिन्दू परिषद के संरक्षक दिनेश कुमार ने कहा कि केंद्र सरकार बाँग्लादेशी अल्पसँख्यकों की सुरक्षा करे। जिस प्रकार सोची–समझी साजिश के तहत हिंदुओं को निशाना बनाया जा रहा है, उसे हिन्दू समाज कतई बर्दाश्त नहीं करेगा। डॉ. शैलेन्द्र जी प्रांत प्रचारक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ उत्तराखण्ड ने कहा कि पुरोला, नैनबाग, डुंडा, घाट चमोली, गोचर आदि घटनाओं से सबक लेते हुए सफलता की ओर कदम बढ़ाए हैं, वस्तुतः हम परिणाम की ओर अग्रसर हैं। अब उत्तराखण्ड में परिस्थितियाँ ठीक हो रही हैं। उत्तराखण्ड में किसी भी मजार के नीचे शरीर के अवशेष प्राप्त नहीं हुए हैं, यह मजार जिहाद का ही परिणाम था।

विश्व हिन्दू परिषद के प्रांतीय मार्गदर्शक मंडल की बैठक में सभी संतों ने बाँग्लादेश में हिन्दुओं के नरसंहार, अत्याचार पर आक्रोश प्रकट करते हुए कहा कि हम आव्हान करते हैं कि हिंदू समाज को सड़कों पर एकत्र आकर संगठित होकर ऐसी हुंकार उठानी चाहिए, जो बाँग्लादेश तक सुनाई दे। संत समाज देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह से मांग करता है कि इस मामले को गंभीरता से लेकर बाँग्लादेशी हिंदुओं की सुरक्षा के लिए कड़े कदम उठाएँ। विश्व हिन्दू परिषद के प्रांत अध्यक्ष रविदेव आनंद ने समापन सत्र में बैठक में पधारे सभी संतों के प्रति आभार व्यक्त किया। प्रांतीय मार्गदर्शक मंडल की बैठक में मंच संचालन अशोक तिवारी केंद्रीय मंत्री धर्माचार्य संपर्क प्रमुख विश्व हिन्दू परिषद ने किया।

आबू धाबी एमिरेट्स की यात्रा

17 दिसम्बर 2024 को हमें आबू धाबी में स्वामीनारायण भगवान के विशाल हिन्दू मंदिर के दर्शन का सौभाग्य मिला। एमीरेट्स घोषित रूप से इस्लामी राष्ट्र है। आबू धाबी उनकी राजधानी है। यह एक अद्भुत कहानी है कि कैसे हिन्दू समाज यहाँ अपना भव्य मंदिर बना पाया? यह विश्व के दो प्रमुख राष्ट्रों, भारत एवं यूएई की मित्रता और आबू धाबी में हिंदुत्व और इस्लाम के मैत्रीपूर्ण संवाद के कारण संभव हुआ।

1997 में शारजहां पधारे पूज्य प्रमुख स्वामी जी महाराज ने इच्छा व्यक्त की एवं श्री भगवान से प्रार्थना की कि आबू धाबी में एक भव्य हिन्दू मंदिर बनाना चाहिए। उस समय तो इसकी किसी को भी संभावना तक नहीं दिखी। इस्लामिक देश में मूर्तिपूजकों का मंदिर, यह स्वप्न तो असंभव ही दिखता था। पर सत्य तो यह है कि उस महापुरुष की कल्पना के साथ ही मंदिर का निर्माण तो निश्चित हो गया था, केवल उसका मूर्त होना शेष था।

भगवान का स्मरण कर, यहाँ की सरकार से मंदिर बनाने की अनुमति मांगी गई, यह अनुमति मिली। सरकार ने अनुमति के साथ भूमि भी मंदिर बनाने के लिए भेंट करने की घोषणा कर दी।

मन में एक संशय आया। क्या सरकार इस इस्लामी देश में परंपरागत शैली में ऊँचे शिखरों वाला मंदिर बनाने की अनुमति देगी? दो तरह के नक्शे बनाये गए। पहले में 7 ऊँचे शिखर थे, दूसरे नक्शे में केवल एक बड़ा हाल था, जिसके अंदर मंदिर बनता।

यहाँ के विदेश मंत्री का उत्तर आया, 'मंदिर को मंदिर ही दिखना चाहिए।' ऊँचे शिखरों वाले मंदिर को स्वीकृति मिली। मंदिर का विस्तृत नक्शा बनाया गया। पार्किंग मंदिर के नीचे दिखाई गई थी। सरकार ने कहा यह सुरक्षा की दृष्टि से ठीक नहीं रहेगा। सरकार ने स्वयं होकर पार्किंग के लिए भी जमीन दे दी। रेतीले मैदान में मंदिर बनाना कठिन हो सकता था। थोड़ी खुदाई से मालूम हुआ, नीचे बड़ी चट्टान है, कोई कठिनाई नहीं। ऐसे अनेक चमत्कार हुए। मानों भगवान ने यहाँ विराजने का पक्का मन बना रखा हो।

प्रस्तावित मंदिर के निर्माण का मॉडल प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 11 फरवरी 2018 को लोकार्पित किया। भूमिपूजन एवं शिलान्यास का शुभ दिन 20 अप्रैल 2019 को आया। शिलान्यास पूज्य महंत स्वामी जी के द्वारा एवं एमीरेट्स के वरिष्ठ नेतृत्व की उपस्थिति में हुआ। मंदिर का निर्माण लगभग 4 वर्षों में पूरा हुआ। राजस्थान की शिलाओं से यह मंदिर बना है। शिलाएँ गढ़ने का काम राजस्थान में हुआ। ऐसी 30000 शिलाएँ, 6 टन की भी है, इस मंदिर के लिए ला कर लगाई गई है।

मंदिर में प्राण–प्रतिष्ठा 14 फरवरी 2024 को पूज्य महंत स्वामीजी महाराज के करकमलों से भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी एवं यूएई के केंद्रीय मंत्री शेख नहयान बिन मुबारक अल नहयान की मंगल उपस्थित में हुआ। इस मंदिर के प्रांगण में जल की 3 धाराएँ–गंगा, यमुना, सरस्वती–एक कुंड में गिरती हैं और फिर मंदिर के चारों ओर प्रवाहित होती हैं। एक स्थान को गंगा माँ का घाट माना है। यहाँ नित्य गंगा माँ की आरती होती है।

मंदिर के सात शिखर हैं। यह यूएई में समाहित 7 एमीरेट्स के भी प्रतीक हैं। सामंजस्य (Harmony) के शिखर में प्रकृति के पाँच महाभूत अथार्त पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश स्थापित किये गए हैं। मंदिर के नींव से शिखर तक इसके प्राणतत्व हैं, पूज्य स्वामी ब्रह्मविहारीदासजी। वह जिनसे मिलते हैं, वही चमत्कृत होता है। उन पर श्रद्धा उमड़ती है, पर सम्बन्धों में एक सहजता भी विद्यमान रहती है। यहाँ के राजपरिवार के भी वह घनिष्ठ हैं। हमारे सौभाग्य से हम उनके दर्शन कर सके और महत्वपूर्ण विषयों पर सार्थक मार्गदर्शक चर्चा हुई।

यह अनंत संभावनाओं का तीर्थ है। धर्मों में संवाद, सहज चर्चा, परस्पर आदर का यह शुभारंभ है। विश्व ने धर्म के नाम पर कितने युद्ध, यातनाएँ और विनाश देखे हैं। अब समय है, प्रेम, सामंजस्य, सद्भाव और आनंद बांटने का। प्रभु से प्रार्थना है कि आबू धाबी का हिन्दू मंदिर विश्व को जोड़नेवाली चेतना से आप्लावित करें।

धनगढी, सुदूर पश्चिम प्रदेश, नेपाल में समाज के प्रतिष्ठित नागरिकों की गोष्ठी में नेपाल के कार्यकर्ताओं के साथ उपस्थित विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद पराण्डे जी। गोष्ठी में सेवा कार्य के साथ जुड़े डॉक्टरों का सम्मान भी किया गया।

नागपुर में विदर्भ प्रांत के जिला मंत्री–सहमंत्रियों के दो दिवसीय अभ्यास वर्ग में विदर्भ प्रांत के पदाधिकारियों के साथ उपस्थित विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे।

हिंदू एल्डर्स फाउंडेशन रोटोरुआ–न्यूजीलैण्ड का पहला भजन और कीर्तन सम्मेलन आयोजित

राँची (झारखण्ड) में गीता जयंती पर धर्मरक्षा निधि कार्यक्रम आयोजित किया गया।

विहिप–बजरंग दल झुन्झुनूं द्वारा आदर्श विद्या मंदिर स्कूल, मोती सिंह की ढाणी में गीता महोत्सव का आयोजन किया गया।

पटना (बिहार) में विहिप–विधि प्रकोष्ठ की गोष्ठी को संबोधित करते विधि प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय सह संयोजक श्री अभिषेक अत्रे जी

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6
email:hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-01/4031/24-26
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
प्रकाशन तिथि : 28.12.2024
प्रेषण तिथि : 29-30 (अग्रिम-पाक्षिक)

LPS BOSSARD
Proven Productivity

PRODUCT SOLUTIONS

Whether a suitable standard solution or a customized component - fastening technology must be matched with a specific customer need. At LPS Bossard we have a solution to your every fastening challenge.

APPLICATION ENGINEERING

Product designers and production engineers all face a maze of challenges when designing and building their products. Making the right choice of fastening solution speeds up assembly and reduces life cycle costs. The application engineers at LPS Bossard have the expertise to help make that critical decision.

SMART FACTORY LOGISTICS

Smart Factory Logistics is an end-to-end service for managing your B- and C-parts. It is a time-tested and proven methodology that helps to leverage hidden potential for productivity improvement.

Rajesh Jain
M.D., LPS Bossard Pvt. Ltd.
Trustee, Vishva Hindu Parishad

LPS Bossard Pvt. Ltd.
NH-10, Delhi-Rohtak Road
Kharawar Bye Pass
Rohtak-124001 (INDIA)
T +91 1262 305164-198
F +91 1262 305111,112
india@lpsboi.com
www.bossard.com

प्रकाशक व मुद्रक हरिशंकर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'रॉयल प्रेस' बी–82, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेस–1, नई दिल्ली–110020 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर–6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली–22 से प्रकाशित। सम्पादक : विजय शंकर तिवारी